हमारे धर्म-ग्रन्थ

लेखक:-

श्री सुदर्शन सिंह जी ‘चक्र’

प्राप्ति स्थान-
प्रकाशन विभाग
श्री कृष्ण- जन्मस्थान-सेवा संघ,
कटरा केशवदेव
मथुरा-२८१००१(उ.प्र)

श्रीमती गीतादेवी अग्रवालकी

पुण्य-स्मृतिमें

मानस चतुरशती समापन समारोह,

मानस नगर, चाकुलिया (बिहार)

की और से प्रकाशित

प्रकाशक: श्री कृष्ण- जन्मस्थान-सेवासंघ

प्रकाशन तिथि-दीपावली, विक्रम सम्वत् २०३३,

दिनांक - २२,१०,१९७६

मुद्रक- राधा प्रेस,

गांधी नगर, दिल्ली-११००३१

HAMARE DHARMA GRANTH: Sudarshan Singh 'Chakra'

मूल्य- एक रुपया

विषय-सूची

हमारे धर्म-ग्रन्थ

हिन्दू धर्म ग्रन्थोंका विस्तार बहुत बड़ा है। हिन्दुओंके धर्म-ग्रन्थोंमें से बहुत बड़ा भाग आज सुलभ नहीं है।
इसमें नीचेके कारण हैं-

१. भारत पर अनेक बार विदेशियोंके आक्रमण-कारियोंमें बहुतसे इतने बर्बर और असंस्कृत थे कि उन्होंने जानबूझ कर प्रयत्नपूर्वक पुस्तकालयों को जलाया। ग्रन्थों-को नष्ट किया।

२. प्राचीन ग्रन्थ ताड़ या भोजपत्र पर लिखे जाते थे। आक्रमणकारियों से बचे ग्रन्थों में भी बहुत से ग्रन्थ अग्निमें जलने अथवा दीमक आदि कीड़ोंके खानेसे नष्ट हो गये।

३. कुछ प्रकृतिके प्रकोपसे नष्ट हुए तो कुछ को लोगों ने स्वयं किसी भावनाके वश में प्रवाहित करके अथवा अग्निमें जलाकर नष्ट कर दिया।

४. इन सब उपद्रवों से बचे ग्रन्थों में से भी बहुत बड़ा भाग ऐसा है जो लोगों के घरों में है और उसका पता दूसरों को नही है। लोग परिस्थितिवश उन्हें प्रकाशित नहीं करा पाते अथवा किसी भावना की भ्रांतिमें पड़कर उसे लोगोंमें प्रचारित नहीं करना चाहते
।

इतना सब होनेपर भी जो प्रकाशित और उपलब्ध ग्रन्थ हैं, उनकी केवल सूची दी जाय तो एक बहुत बड़ा ग्रन्थ बनेगा। इसलिये मुख्य-मुख्य ग्रन्थोंकी नामावली बहुत संक्षिप्त रूपसे दे रहा हूँ।

हिन्दुओंके धर्म ग्रन्थोंका श्रेणी-विभाग इस प्रकार किया जाता है-

१- वेद
२- वेदके अंग
३- उपवेद
४ - इतिहास और पुराण
५ - स्मृति
६ – दर्शन
७ - निबन्ध
८ - आगम
९ - सम्प्रदाय-ग्रन्थ
१० - वाणी-ग्रन्थ
११ - जैन-ग्रन्थ
१२ - बौद्ध-ग्रन्थ

१ - वेद

वेद शब्द 'विद्' धातु से बना है, इसका अर्थ है ज्ञान। ईश्वरीय ज्ञानका नाम ही वेद है।

‘यस्य निःश्वसित वेदाः

वेद ईश्वरका ज्ञान है अथवा वेद ईश्वरका निःश्वास प्राण है। इसका अर्थ है कि जैसे ईश्वर अनादि-अनन्त अविनाशी है, वैसे ही वेद भी अनादि-अनन्त अविनाशी है। ईश्वर कभी ज्ञानहीन यानिष्प्राण नहीं था। अतःवेद ईश्वरके समान नित्य है।

ईश्वरने वेद बनाया नहीं, सृष्टिके प्रारम्भमें वह वेदों को-अपने ज्ञानको प्रगट करता है।

वेदमें क्या नित्य है ?

वेदके मन्त्रोंकी शब्दानुपूर्वी नित्य है। अर्थात् वेदके प्रत्येक मन्त्रका शब्द-क्रम ज्यों का त्यों नित्य है; किंतु एक मन्त्रके बाद दूसरे मन्त्रका जो क्रम है, वह परिवर्तित होता रहा है।

वेद एक है

वेद न तीन हैं और न चार । वेद एक ही है । प्रयोजन वश वेदके चार विभाग किये गये हैं और यह विभाग द्वापरान्तमें भगवान कृष्ण द्वैपायन व्यासजीने किया। दिवंगत श्रीपाद दामोदर सातवलेकरजीने सम्पूर्ण वेदको एक रूपमें 'दैवत संहिता' के नामसे प्रकाशित भी किया है।

वेदत्रयी

इसका अर्थ तीन वेद नहीं है। इस नामने बड़े-बडे वैदिक अन्वेषकों को भ्रममें डाला है। वे यह सोच बैठे कि तीन वेद ही मुख्य हैं और चौथा कदाचित पीछेका है। किन्तु ऐसा मानना सर्वथा भ्रम है।

वेदत्रयी का अर्थ है त्रिकाण्डात्मक वेद । वेदमें ज्ञान, कर्म और उपासना इन्हीं तीन विषयोंका वर्णन है । पूरे वेदोंके सब मन्त्र इन्हीं में से किसी न किसी विषयका प्रति पादन करते हैं। इन तीन विषयोंका प्रतिपादक होनेसे वेद को 'त्रयी' कहते हैं।

चार वेद

समाजमें चार वेदोंकी प्रसिद्धि है । ये चार वेद हैं-

१- ऋग्वेद
२- यजुर्वेद
३ - सामवेद
४ - अथर्ववेद

लेकिन ये चार न तो चार सर्वथा भिन्न ग्रन्थ हैं और न एक ग्रन्थके चार खण्ड हैं। वेद व्यासजी ने 'यज्ञ' के कर्म को ध्यान में रखकर वेदका इन चार रूपों में विभाग कर दिया है।

यज्ञमें चार मुख्य कार्य-कर्ता होते हैं-

१-होता २-अध्वर्यु ३-उद्गाता और ४-ब्रह्मा

इनमें होताके काममें आने वाले मन्त्रोंके संग्रहका नाम ऋग्वेद है। अध्वर्यु के काममें आने वाले मन्त्र-संग्रह का नाम सामवेद है और ब्रह्माके काम में जो मन्त्र आते हैं, उनका नाम अथर्ववेद है।

जो मन्त्र दो-तीन या चारोंके काम आते हैं, वे उन उनके वेदोंमें हैं। इस प्रकार सामवेदके बहुत अधिक मन्त्र ऋग्वेद में और कुछ अथर्ववेद में भी हैं । वेदका यह विभाग कुछ ग्रन्थका खण्ड करनेके लिये तो है नहीं। होता, अध्वर्यु आदिके उपयोगके मन्त्रोंका संग्रह इन चार रूपोंमें किया गया है।

वेदमन्त्रके ऋषि, देवता, छन्द और विनियोग

वेदमन्त्रके साथ ये चारों बातें अनिवार्य रूपसे याद की जाती है। इनको याद रखने का प्रयोजन है-

विनियोग- इससे यह पता लगता है कि मन्त्र किस प्रयोजन में आवेगा।

छन्द-मन्त्रका उच्चारण कैसे किया जाना चाहिये इसका पता छन्दसे लगता है।

ऋषि - वेदमन्त्र एक प्रकारके सूत्र हैं । उनका सम्पूर्ण अर्थ निरुक्त के द्वारा नहीं जाना जा सकता। जिस मन्त्र के अर्थका दर्शन जिस ऋषिने समाधिमें किया है, उसे उस मन्त्रका द्रष्टा ऋषि कहते हैं । उस ऋषिके ग्रन्थों में उसी मन्त्रके अर्थ की व्याख्या है।

देवता–यदि ऋषिके ग्रन्थ नष्ट हो जाये तो मन्त्र के देवता का ध्यान करते हुए उस मन्त्रके जपसे जो समाधि लगेगी, उसमें उस मन्त्रका अर्थ-दर्शन होगा। इस प्रकार की बात गायत्रीमन्त्र के सम्बन्ध में है। पहिले उसके ऋषि वशिष्ठ थे, फिर विश्वामित्र उसके ऋषि हुए।

वेदपाठ-प्रणाली

वेदको श्रुति कहते है। एक दूसरेसे सुनकर ही वैदिक मन्त्रोंका पाठ सर्वथा शुद्ध होना चाहिये। वेद मन्त्रों के अशुद्ध अथवा त्रुटिपूर्ण पाठसे पाठकर्ताका अनिष्ट होता है। अतः वेदपाठकी कई रीतियाँ हैं। इन रीतियोंका यह भी उपयोग है कि वेदमन्त्रके प्रत्येक शब्द एवं अक्षरका स्थान सुनिश्चित रहे। उसमें कोई भ्रम न हो। ये पाठ प्रणालियां निम्न हैं-

१-क्रमपाठ २-घनपाठ ३-जटापाठ ४-रेखापाठ ५-मालापाठ ६-ध्वजपाठ ७-दण्डपाठ और ८-रथपाठ।

वेदोंकी शाखायें

वेद की शाखा का वह अर्थ नहीं है, जो ग्रन्थ के खण्ड का अर्थ होता है। शाखा का अर्थ है सम्पादन-क्रमका भेद। जैसे एक ऋषि ने एक वेद अपने एक शिष्य को देवताक्रम से कण्ठस्थ कराया। उससे एक देवता के मन्त्र एक साथ कण्ठस्थ किये। दूसरे

शिष्यको छन्द क्रम से, तीसरेको ऋषिक्रम से, चौथेको विनियोग क्रम से मन्त्र कण्ठ कराये । ये क्रम-भेदसे चार शाखायें हो गई । प्रत्येक शाखामें मन्त्र तो पूरे हैं और वहीं हैं; किन्तु उनका क्रम भिन्न है। अत: किसी वेदकी एक भी शाखा मिलती है तो पूरा वेद प्राप्त हो गया। शाखाके लुप्त होनेसे वेदका कोई अंश लुप्त नहीं हुआ।

वेदोंकी शाखाओंका विवरण इस प्रकार है-

ऋग्वेद - इसकी २१ शाखायें थी। इनमें से शुद्ध रूपमें केवल शाकल्य शाखा प्राप्त होती है।

यजुर्वेदके दो पाठ हैं। एक शुक्ल यजुर्वेद और दूसरा कृष्ण यजुर्वेद कहा जाता है।

शुक्ल यजुर्वेद - इसकी १५ शाखायें थीं। इनमें से अब काव्य तथा माध्यनन्दिगो ये दो शाखायें प्राप्त होती हैं।

कृष्ण यजुर्वेद - इसकी ८५ शाखायें थीं। इनमें से तैत्तरीय मैत्रायणी, कठ, कापिष्ठल ओर श्वेताश्वतर ये पांच शाखायें अब प्राप्त हैं।

सामवेद - यह गायनका वेद है । संगीत में गादि भेदसे सबसे अधिक शाखायें इसीकी हुईं। इसकी १००० शाखायें थीं; किन्तु उनमें अब केवल तीन प्राप्त हैं-१-कौथुमी २-जैमिनीया और ३-रायणीया।

इनमें भी तीसरी अपूर्ण ही मिलती है।

अथर्ववेद– इसकी ९ शाखायोंमें-से अब केवल पैप्पलादी और शौनकीया ये दो शाखायें ही शुद्ध रूपमें उपलब्ध हैं।

वेदोंका अनुपूरक साहित्य

कुछ लोग केवल मन्त्र-संहिताओं को ही वेद मानते हैं; किन्तु सनातनधर्मी विद्वान वेदके अनुपूरक ग्रन्थों को भी वेद ही मानते हैं । इन अनुपूरक ग्रन्थों का विभाग यह है –

१-ब्राह्मण ग्रन्थ

२-आरण्यक और उपनिषद

३-श्रौतसूत्र

४- गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र

५-प्रातिशाख्य

६-अनुक्रमणी

प्रत्येक वेदके ही ये ६ प्रकारके अनुपूरक ग्रन्थ हैं । अतः वेदोंके क्रमसे ही इन्हें जो अब उपलब्ध हैं, दिया जा रहा है।

ब्राह्मण- ग्रन्थ

वेद-मन्त्रोंका यज्ञमें कैसे उपयोग किया जाय, यह इन ग्रन्थों में बतलाया गया है।

ऋग्वेद के-ऐतरेय ब्राह्मण और शाङ्ख्यायन ब्राह्मण (अथवा कौषीतिकी ब्राह्मण)

शुल्कयजुर्वेद के- शतपथ ब्राह्मण (यह दो प्रकारका है काव्य शाखाका १७ काण्डका और माध्यनन्दिनी शाखा का १४ काण्डका)

कृष्णयजुर्वेद के-तैत्तरीय ब्राह्मण तथा तैत्तरीय संहिताका मध्यवर्ती ब्राह्मण।

सामवेद के-१ताण्ड (पञ्चविंश) ब्राह्मण २-षड्विंश ब्राह्मण ३-सामविधान-ब्राह्मण ४-आषय ब्राह्मण ५-मन्त्र ब्राह्मण ६-देवताध्याय ब्राह्मण ७-वंश ब्राह्मण ८-संहितोप निषद ब्राह्मण ९-जैमिनीय ब्राह्मण १०-जैमिनीय उपनिषद ब्राह्मण।

अथर्ववेद का-गोपथ ब्राह्मण।

आरण्यक और उपनिषद

ब्राह्मण ग्रन्थोंके जो भाग वनमें पढ़ने योग्य हैं- उनका उनका नाम आरण्यक है। इनमें ज्ञान अथवा उपासनाका प्रतिपादन हुआ है। इस समय लगभग २७५ उपनिषद प्राप्त हैं। इसमें से बहुतों का निर्माण पीछे हुआ है। अतः सब को प्रामाणिक नहीं माना जाता। तेरह उपनिषद मुख्य हैं, जिनपर आचार्योने भाष्य लिखे हैं। उनके नाम ये हैं-

१-ईश

२-केन

३-कठ

४-मुण्डक

५-माण्डूक्य

६-प्रश्न

७-ऐतरेय.

८-तैत्तरीय

९-छान्दोग्य

१०-वृहदारण्यक

११-श्वेताश्वतर

१२-केषीतिकी

१३- नृसिंह तापनी।

इनमें से ईशवास्योपनिषद् यजुर्वेद तथा अथर्ववेद की मूल संहिता में ही है।

श्रौत सूत्र

वेदों का सूत्रभाग चार प्रकारके हैं-

१-श्रौतसूत्र २-गृह्य सूत्र ३-धर्म सूत्र ४-शुल्ब सूत्र

श्रौत सूत्रोंमें मन्त्र-संहिताके कर्मकाण्ड को स्पष्ट किया गया है।

इस समय जो श्रौतसूत्र उपलब्ध हैं उनका वर्णन इस प्रकार है-

ऋग्वेद के-१-आश्वलायन और २-शाङ्ख्यायन श्रौतसूत्र।

शुक्ल यजुर्वेद का-कात्यायन (या पारस्कर) श्रौत सूत्र।

कृष्ण यजुर्वेद के-१-आपस्तम्ब श्रौतसूत्र २-हिरणकेशीय (सत्याषाढ़) श्रौतसूत्र ३-बौधायन श्रौतसूत्र ४-भारद्वाज ५-वैखानस ६-वाधूल ७-मानव और ८- वाराह श्रौतसूत्र।

सामवेद के-१-मशक सूत्र २-लाह्यायन सूत्र ३-द्राह्यायण सूत्र ४-खदिर सूत्र।

अथर्ववेद का-वैतान श्रौतसूत्र।

गृह्य सूत्र

गृह्य सूत्रमें कुलाचार का वर्णन रहता है।

ऋग्वेद के-१-आश्वलायन गृह्यसूत्र और २-शाङ्ख्यायन गृह्यसूत्र।

शुक्ल यजुर्वेद का-१-पारस्कर गृह्यसूत्र इसपर कर्क, जयराम, गदाधर आदिकी सात संस्कृत टीकायें प्राप्त हैं।

कृष्ण यजुर्वेद के -१- मानव गृह्यसूत्र २-काठक गृह्यसूत्र ३-आपस्तम्ब गृह्यसूत्र ४-बौधायन गृह्यसूत्र ५-वैखानस गृह्यसूत्र ५-हिरण्यकेशीय गृह्यसूत्र।

सामवेद के-१-जैमिनीय गृह्यसूत्र २-गोभिल गृह्यसूत्र ३-खादिर गृह्यसूत्र ४-द्राह्यायण गृह्यसूत्र।

अथर्ववेद के-१-कौशिक गृह्यसूत्र २-वाराह गृह्यसूत्र ३-वैखानस गृह्यसूत्र।

धर्म सूत्र

धर्म सूत्रोंमें धर्माचारका वर्णन हैं। इन्हीं सूत्रोंके आधारपर स्मृतियोंका निर्माण हुआ । स्मृतियाँ धर्मसूत्रों पर एक प्रकारकी कारिकायें हैं।

ऋग्वेदका-वशिष्ठ धर्म सूत्र- इस परसंस्कृत में कई टीकायें हैं।

शुक्ल यजुर्वेदके-१-कात्यायन धर्मसूत्र २-विष्णु धर्म सूत्र ।

कृष्ण यजुर्वेदके-१-मानव धर्मसूत्र २-काठक धर्मसूत्र ३-आपस्तम्ब धर्मसूत्र ४-बोधायन धर्मसूत्र ५-वैखानस धर्म सूत्र ६-हिरण्यकेशीय धर्मसूत्र ।

सामवेदके-१-गौतम धर्मसूत्र (इसपर मक्करि भाष्य तथा मिताक्षरा वृत्ति प्राप्त है ।) २-छान्दोगपरिशिष्ठ ।

अथर्ववेद - इसका कोई धर्म सूत्र प्राप्त नहीं है।

शुल्ब सूत्र

इन सूत्रों में भौतिक विज्ञान का वर्णन था; किन्तु इन का सर्वथा लोप हो गया। अब केवल यजुर्वेद का कात्या यन शुल्बसूत्र प्राप्त है । इसमें ज्यामिति शास्त्रका विस्तृत वर्णन है।

नियम यह है कि वेद की प्रत्येक शाखाका एक गृह्यसूत्र, एक धर्मसूत्र, एक श्रौत सूत्र, एक शुल्बसूत्र और एक प्रातिशाख्य होना चाहिये । जिस वेदकी जितनी शाखाये पहिले कही गई हैं, उसके

उतने में चारों प्रकारके सूत्र ग्रन्थ तथा प्रातिशाख्य थे; किन्तु इन ग्रन्थोंका लोप हो गया। विशेषतः शुल्ब सूत्रों का लोप होनेसे वैदिक भौतिक-विज्ञान ही लुप्त हो चुका है।

प्रातिशाख्य एक प्रकारके वैदिक व्याकरण ग्रन्थ हैं। इनके नाम वेदोंके नामानुसार ही हैं, जैसे ऋक् प्रातिशाख्य, यजुः प्रातिशाख्य, साम प्रातिशाख्य और अथर्व प्रातिशाख्य। ये चारों वेदोंके ही उपलब्ध हैं।

अनुक्रमणी

इन ग्रन्थोंका प्रयोजन है वेदोंकी रक्षा और वेदार्थका विवेचन।

केवल ऋग्वेद और यजुर्वेद के अनुक्रमणी ग्रन्थ अब मिलते हैं।

ऋग्वेद के-

१ - आर्षानुक्रमणी-इसमें मन्त्रके क्रमसे ऋषियों के नाम हैं।

२-छन्दोनुक्रमणी ३-देवतानुक्रमणी ४-अनुवाकानु क्रमणी ५-सर्वानुक्रमणी ६-वृहदैवत ७-ऋग्विज्ञान ८-बहवृच परिशिष्ट९-शाङ्ख्यायन परिशिष्ट १०-आश्वलायन परिशिष्ट ११-ऋक् प्रातिशाख्य।

शुक्ल यजुर्वेद के-

१-प्राति शाख्यसूत्र २-कात्यायनानु क्रमणी।

कृष्ण यजुर्वेद के-

१-आत्रेयानुक्रमणी २-चारायणीयानु क्रमणी ३-तैत्तरीय प्रातिशाख्य।

२-वेदोंके अंग

जैसे मनुष्यके हाथ, पैर, कर्ण-नेत्रादि अंग होते हैं, वैसे ही वेदके भी ६ अंग माने गये हैं।

१-वेदकी नासिका है –शिक्षा
२-वेदका मुख है -व्याकरण
३-वेदके कर्ण हैं -निरुक्त
४-वेदके चरण हैं- छन्द
५-वेदके हाथ हैं -कल्प
६-वेदके नेत्र हैं -ज्योतिष

शिक्षा ग्रन्थ

इनमें मन्त्रके स्वर, अक्षर, मात्रा तथा उच्चारण विवेचन होता है।

इस समय निम्न शिक्षा-ग्रन्थ प्राप्त हैं।

१-ऋग्वेद की-पाणिनीय शिक्षा।

२-शुक्ल यजुर्वेद की-याज्ञवल्क्य शिक्षादि २५ शिक्षा ग्रन्थ मिलते हैं।

३-कृष्ण यजुर्वेद की-व्यास शिक्षा

४-सामवेद की-

१गौतमी शिक्षा २-लोमशी शिक्षा ३-नारदीया शिक्षा।

५-**अथर्ववेद**-माण्डूकी शिक्षा।

व्याकरण-ग्रन्थ

व्याकरणका काम है, भाषाका नियम स्थिर करना।

ऐसा प्रतीत होता है कि शाकटायन व्याकरणके सूत्र और आजकलका पाणिनीय व्याकरण ये यजुर्वेदसे सम्बद्ध हैं।

पहिले शाकायादिके भी बहुतसे व्याकरण ग्रन्थ थे, जिनके सूत्र पाणिनीय व्याकरणमें हैं।

पाणिनीय व्याकरण पर कात्यायन ऋषिकावार्तिक और महर्षि पतञ्जलि का महाभाष्य है। इसके पश्चात् इसपर व्याख्या टीका तथा विवेचनात्मक ग्रन्थोंकी संख्या तो बहुत बड़ी है।

नारदीय पुराणमें व्याकरणकी कारिकायें हैं व्याकरण के विद्वानोंने इधर ध्यान ही नहीं दिया, यह आश्चर्य की बात है।

इनके अतिरिक्त सारस्वत-व्याकरण, कामधेनु-व्याकरण, प्राकृत-प्रकाश, प्राकृत-व्याकरण, कलाप-व्याकरण, मुग्ध बोध

व्याकरण आदि व्याकरण-शास्त्रके बहुतसे ग्रन्थ हैं। इन सबपर भी भाष्य, टीका, विवेचनादि हैं।

संस्कृत-पठन पाठनकी परम्परामें देश में व्याकरणको बहुत अधिक महत्व मिल गया था। फलत: व्याकरणके ग्रन्थों को एवं उनपर भाष्य, टीका, विवेचनादिके ग्रन्यों का भी बहुत विस्तार हुआ।

निरुक्त

निरुक्त जैसे पाणिनीय-व्याकरण के प्रचारसे प्राचीन व्याकरण ग्रन्थ लुप्त हो गये, वैसे ही निरुक्त ग्रन्थ भी लुप्त हो गये।

निरुक्त वेदोंकी व्याख्या-पद्धति बतलाते हैं। इन्हें वेदोंका विश्वकोष कहना उपयुक्त है।

अब केवल यास्काचार्यका ही निरुक्त मिलता है।

इसपर बहुत से भाष्य, टीका, विवेचन ग्रन्थ हैं।

कश्यप, शाकपूणि आदि के निरुक्त ग्रन्थोंके नाम ही अब अन्य ग्रन्थों में मिलते हैं।

छन्द

वैदिक छन्दोंके निर्देशक इस समय अब इतने ग्रन्थ मिलते हैं-

१-गार्ग्य प्रोक्त उपनिदान सूत्र (सामवेदीय)

२-पिङ्गलनाग प्रोक्त छन्दः सूत्र (छन्दोवीचि)

३-वेङ्कटमाधवकृत छन्दोऽनुक्रमणी

४-जयदेवका छन्दः सूत्र

लौकिक छन्दों पर बहुत अधिक ग्रन्थ प्राप्त हैं। नारद पुराण में भी छन्दशास्त्र की कारिकायें हैं । प्राचीन मुख्यग्रन्थ लौकिक छन्दोंमें जो प्राप्त हैं, उनके नाम ये हैं-

१- छन्द:शास्त्र (रुलायुधवृत्ति)

२-छन्दोमञ्जरी

३-वृत्तरत्नाकर

४-श्रुतबोध

५-जानाश्रयी छन्दोवीचि

कल्प-ग्रन्थ

कल्प-सूत्रोंमें यज्ञकी विधिका वर्णन है । वर्णाश्रम धर्म में उपयोगी संस्कारकी विधियाँ भी इनमें हैं। इनके नियमों का विस्तार गृह्यसूत्रों में हुआ है। इन्हीं का दूसरा नाम 'श्रौतसूत्र' है। वेदके अनुपूरक साहित्यके वर्णनमें इनका वर्णन आ चुका है।

ज्योतिष

इस शास्त्रका मुख्य प्रयोजन यज्ञों तथा संस्कारोंके लिये निश्चित मुहूर्त बतलाना और यज्ञस्थली, यज्ञमण्डपादि की माप बतलाना है।

व्याकरणके समान ज्योतिष भी लौकिक वैदिक दो प्रकार का हो गया और उसमें लौकिक ज्योतिष में गणित ज्योतिषके साथ

फलित ज्योतिषका विस्तार होनेसे ज्योतिष शास्त्रके ग्रन्थोंका बहुत विस्तार हुआ। फलित ज्योतिष प्राचीन नहीं है, यह धारणा भ्रान्त है। वैदिक यज्ञों में भी अधिकारी के निर्णयके लिए फलित ज्योतिषको आवश्यकता थी। यज्ञ-विघ्नोंके निवारणका उपाय भी यही शास्त्र बतलाता था।

अथर्ववेदकी मूल संहितामें ही ज्योतिषके मूलको पाया जाता है । नारद-पुराण और अग्नि-पुराणमें षडङ्ग ज्योतिष की कारिकायें हैं। पता नहीं क्यों विद्वानोंका ध्यान पुराणोंमें निहित विद्याओं की ओर गया ही नहीं।

वैदिक ज्योतिष की तीन पुस्तकें बहुत प्राचीन कालकी मिलती हैं-

१-ऋक्ज्योतिष लगधाचार्य कृत

२-यजुः ज्योतिष आचार्य शेष कृत

३-अथर्व ज्योतिष-पितामह कृत

वाराह मिहिर कृत पाञ्चसिद्धान्तिकामें पैतामह सिद्धान्तकी चर्चा है। वार्हस्पत्यने भी इस सिद्धान्तका उल्लेख किया है।

पितामह ज्योतिषके १६२ श्लोक कहे जाते हैं। ऋक् ज्योतिषके ३६ और यजुः ज्योतिषके ४३ श्लोकोंका भाष्य वार्हस्पत्यने किया है।

वेदांग ज्योतिषका कार्य पंचांग निर्माण है, और यह कार्य वार्हस्पत्य भाष्यसे स्पष्ट हो जाता है।

लौकिक ज्योतिष ग्रन्थोंका बहुत विस्तार है और अब भी उनकी रचना हो रही है। इनमें पुराने ज्योतिषाचार्य हैं-पराशर, गर्ग, नारद, वशिष्ठ। इन ऋषियों के ग्रन्थ प्राप्त हैं।

वाराहमिहिर, आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, कमलाकर आदि ज्योतिषके मुख्य आचार्य ऋषियोंके पश्चात् हुए हैं। इनके ग्रन्थ तो हैं ही, उनपर भाष्य, टीकायें, विवेचन आदिका विस्तार भी बहुत है।

३-उपवेद

प्रत्येक वेदका एक उपवेद होता है। ये उपवेद इस प्रकार हैं

ऋग्वेद का उपवेद - अर्थवेद।

यजुर्वेद का उपवेद -धनुर्वेद।

सामवेद का उपवेद -गान्धर्ववेद।

अथर्ववेद का उपवेद- आयुर्वेद ।

अर्थवेद

'वृहस्पतेराधिकारिकम्' इस वाक्यसे वृहस्पतिकृत अर्थ वेद का पता लगता है किन्तु इस नामसे जो ग्रन्थ प्राप्त होता है, वह बहुत छोटा है।

इस विषयका महत्वपूर्ण ग्रन्थ जो आज प्राप्त है, वह है कौटिल्यका अर्थशास्त्र।

इसके अतिरिक्त पीछेके रचित ग्रन्थ निम्न और मिलते हैं

१-सामवेदभट्ट कृत नीतिवाक्यामृत सूत्र,

२-चाणक्य सूत्र,

३-कामन्दक नीति,

४-शुकनीति आदि।

धनुर्वेद

धनुर्वेदमें अस्त्र-शास्त्रोंके निर्माण तथा प्रयोगोंका वर्णन है। प्राचीन ग्रन्थोंमें वायुयान बनाने की विधि भी थी। 'डाइजेस्ट' पत्र में कभी निकला था कि ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रशासन काल में बम्बई में किसी पंडितने एक 'पारदथान' बनाकर, उसे उड़ाया भी था।

यह शास्त्र प्रयोग करके सीखने का है। प्रयोगकी परम्परा बन्द हो जानेसे इस विद्याका लोप हो गया। इसके निम्न ग्रन्थ मिलते हैं-

१-वैशम्पायनका धनुर्वेद (वैशम्पायन नीति प्रकाशिका)

२-वृद्ध शाङ्गधर

३-युक्तिकल्पतरु

४-समराङ्गण सूत्रधार।

श्रीमधुसूदन सरस्वतीने अपने ग्रन्थ प्रस्थान भेदमें महर्षि विश्वामित्र कृत धनुर्वेद की चर्चा की है; किन्तु वह ग्रन्थ अब प्राप्य नहीं है।

बस्तीके स्वर्गीय प्रज्ञाचक्षु विद्वान पं० श्रीधनराज शास्त्रीको धनुर्वेद का एक ग्रन्थ स्मरण था । उसे वे यजुर्वेद का वास्तविक उपवेद धनुर्वेद कहते थे और उसकी श्लोक संख्या ६०,००० बतलाते थे। दुर्भाग्यसे वह ग्रन्थ उनसे किसीने लिखा नहीं । बस्तीके मुन्सिफ बाबू कृष्णचन्द्रजी श्रीवास्तव ने कुछ ग्रन्थोंकी सूचियाँ उनसे लिखलीं। उनसे वे सूचियाँ स्वर्गीय प्रोफेसर रामदास गौड़को प्राप्त हुई। उनमें से कुछ सूचियाँ उन्होंने अपने ग्रन्थ 'हिन्दुत्व' में दी हैं।

ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, काशीसे विक्रम संवत् १९९५ (सन् १९३८ ई०) में छपे 'हिन्दुत्व' का प्रथम संस्करण मेरे सामने है (इसका दूसरा संस्करण अबतक नहीं हुआ है)। इसमें धनुर्वेदको वही प्रज्ञाचक्षु पं० धनराज शास्त्रीकी लिखाई विषय सूची है । कुल १०८ विषय या अध्यायोंके नाम इसमें हैं। इनमें से बहुत ध्यान देने योग्य निम्न नाम हैं, मैं उनके नम्बर वही दे रहा हूँ जो 'हिन्दुत्व' में हैं-

१०-परमाणु की एकत्रता

११-उनके वियोजन की आवश्यकता

१२-वियोजन प्रकार

१३-संयोजन विधि

१४-एक-एक की, दो की, तीन की, चार की

९०-विचार भञ्जन

९१-विस्मृति-अस्त्र

९७-स्वप्न-विजय

९८-ज्वर-बाण

'हिन्दुत्व' में इस विषय सूचीके अन्तमें यह भी दिया है कि श्रीधनराज शास्त्रीको 'धनुष-चन्द्रोदय' नामका एक दूसरा ग्रन्थ भी स्मरण था। उसमें परमाणुसे ही धनुष वाण एवं समस्त शस्त्रोंके निर्माण और प्रयोगकी विधि थी।

स्मरण रखने योग्य है कि सन् १९३८ ई० तक (जब कि 'हिन्दुत्व' छपा) परमाणु-विज्ञानका कोई ज्ञान सर्व साधारणको नहीं था। निश्चय ही यह सूची उससे कुछ वर्ष पूर्वकी होगी । बस्तीके एक अन्धे व्यक्तिके लिये 'परमाणु-वियोजन' की बात कल्पित करना उस समय सम्भव नहीं था। फिर इसमें तो 'परमाणु संयोजनास्त्र' भी है, जिसकी कोई कल्पना अब भी विज्ञानको नहीं है। लेकिन श्रीधनराज शास्त्रीके जीवन काल में उनसे यह ग्रन्थ किसीने लिखा नहीं । अन्धे होनेके कारण वे लिख नहीं सकते थे । अतः अब तो यह सूची ही हाथमें है।

गान्धर्व वेद

इस उपवेदमें नृत्य एवं गायनका विषय है । यह राग रागिनी, ताल-स्वर, वाद्य तथा नृत्यके भेदोपभेद एवं मुद्राओंका वर्णन करता है ।

गान-विद्या प्राचीन कालसे चली आरही है। उसके पुराने 'घराने' अब भी हैं। लेकिन वैदिक गान विद्या सामगान थी। उसके दो भेद थे-

१-अरण्यगान

२-गेयगान

इन दोनों प्रणालियोंका लोप हो गया है।

प्राचीन गायन शास्त्रके इस समय भी बहुतसे ग्रन्थ उपलब्ध हैं। उनमें मुख्य ये हैं -

१ भरत नाट्यशास्त्र-श्रीभरतमुनिकृत (इसपर अभिनव गुप्तकी टीका है।)

२-दत्तिलमुनिका दत्तिलम् ।

३-शाङ्गदेवका संगीत-रत्नाकर (इसपर कई टीकायें उपलब्ध हैं।)

४-दामोदरकृत संगीत-दर्पण ।

आयुर्वेद

यह शास्त्र शरीर की रचना, रोगके कारण, रोग के लक्षण, औषधि-गुण-विधान तथा चिकित्साका वर्णन करता है।

आयुर्वेदके ग्रन्थोंमें अत्यन्त प्राचीन ग्रन्थ हैं-

१-अश्विनीकुमार संहिता

२-ब्रह्मसंहिता

३-भल्ल संहिता

४-आग्नीध्र सूत्रराज।

इनके अतिरिक्त प्राचीन ग्रन्थ हैं-

५-चरक संहिता

६-सुश्रुत संहिता

७-अष्टाङ्ग-हृदय

८-धातुवाद

९-धन्वन्तरि सूत्र

१०-मान सूत्र

११-सूपशास्त्र

१२-सौभरि सूत्र

१३-दाल्भ्य सूत्र

१४-जाबालि सूत्र

१५-इन्द्र सूत्र

१६-शब्द कुतूहल

१७-देवल सूत्र

आयुर्वेदके ग्रन्थोंकी संख्या सहस्रोंमें है। प्राचीन ग्रन्थों पर भाष्य, टोकायें तो हैं ही, स्वतन्त्र नवीन ग्रन्थ और संकलन-ग्रन्थ भी बहुत हैं। अब भी चिकित्सा ग्रन्थ लिखे जा रहे हैं-छप रहे हैं।

केवल मनुष्योंकी चिकित्सा तक ही आयुर्वेद सीमति नहीं है। अश्व, गज, गाय तथा दूसरे अनेक पशु-पक्षियों की चिकित्साके उपायोंका भी उसमें वर्णन मिलता है। इन विषयोंपर भी प्राचीन ग्रन्थ थे; किन्तु अब उनका उल्लेख मात्र प्राप्त होता है।

४-इतिहास और पुराण

इतिहासपुराणभ्यां वेदं समुपबृहयेत ।
बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदोऽयं मां प्रहरिष्यति ॥

इतिहास और पुराणोंके द्वारा वेदका समुपबृहण करे।

वेद अल्पश्रुत व्यक्तिसे डरता है कि यह मुझपर चोट करेगा- यह मेरे अर्थकाअनर्थ करेगा।

इतिहास पुराणोंमें ही वेदार्थका पूरा-पूरा विवेचन हुआ है । अतएव इनका विचार किये बिना वेदोंका ठीक ठीक अर्थज्ञान हो नहीं सकता। इसीलिये इतिहास-पुराणको वेदका उपाङ्ग कहा जाता है।

इतिहास

इति=ऐसा+ह=निश्चय+आस हुआ था- ऐसा निश्चय हुआ था, यह इतिहास शब्दका अर्थ है।

पाश्चात्य विद्वानों तथा उनके भारतीय अनुयायियों द्वारा भी प्रायः आक्षेप किया गया है कि 'हिन्दुओंको इतिहास लिखना-रखना नहीं आता था।' सच यह है कि ऐसे लोगोंने इतिहासकी समस्या और प्रकृतिपर कभी विचार ही नहीं किया। वे यह जानते ही नहीं कि इतिहास अपने आपको संक्षिप्त करता जाता है और कम महत्वपूर्ण बातोंको छोड़ता जाता है।

पहिले कांग्रेसके इतिहासमें प्रत्येक कार्य-कारिणीके सदस्यका पूरा परिचय रहता था और कांग्रेसके अधिवेशनोंकी ही पूरी कार्यवाही नहीं होती थी, कार्यकारिणी की बैठकों की भी पूरी कार्यवाही होती थी।

अब विवरणमें केवल पास हुए प्रस्ताव तथा उनके प्रस्तावक-अनुमोदकका नाम होता है। पक्ष-विपक्षमें बोलने वालोंका नाम भी नहीं होता।

यह संस्था यदि पाँच सौ वर्ष जीवित रहे तो विवरण में केवल अध्यक्षका नाम और पास हुए प्रस्ताव भी कदाचित ही रहें। तब केवल मुख्य- मुख्य अध्यक्षोंके नाम तथा महत्वपूर्ण प्रस्तावों की नामावली रह जायगी।

यही अवस्था देशों तथा सभी संस्थाओं के इतिहासकी है । जो संस्था जितनी पुरानी होती है, उसे अपना इतिहास उतने संक्षिप्त ढंगसे लिखना पड़ता है।

यदि हिन्दू अपना इतिहास रखते-स्वर्गीय प्रोफेसर रामदास गौड़ने 'हिन्दूत्व' में उस इतिहासका सम्भाव्य आकार बतलाया है। मैं उसे यहाँ जैसे का वैसा दिये दे रहा हूं -

भारतकी परम्परा इतनी प्राचीन बतलाई जाती है कि यदि उस कालसे आजतकका इतिहास वर्तमान होता और अत्यन्त संक्षिप्त लिखा जाता-

सौ-सौ बरसके लिये केवल एक-एक पृष्ठ लिखा जाता तो १,९६,८६,४३१ पृष्ठ उसमें होते।

यदि १००० पृष्ठकी एक जिल्द बनाई जाय तो उस इतिहासकी मोटी-मोटी १९,६८६ जिल्दें होती।

यदि मनुष्य एक मिनट में २५ पंक्ति पढ़ले और ५ घंटे प्रतिदिन पढे, एक पृष्ठमें २५ पंक्ति हों और यह भी मानले कि महीने में २५ दिन पुस्तक पढ़ी ही जाय तो इस इतिहास को पढ़ने में २१७ वर्ष लगेंगे।'

एक पूरी शताब्दी का इतिहास केवल एक पृष्ठमें लिखा जाय तो उसमें कितना कुछ आवेगा! इतना संक्षिप्त होमेपर भी यह साढ़े उन्नीस हजार से भी अधिक जिल्दों का इतिहास पढ़ेगा कौन? क्या उपयोग होगा इसका ?

इसलिये हिन्दू संस्कृतिमें इतिहास रखने-इतिहासको संक्षिप्त करनेकी कुछ विशेष प्रणाली है। उस प्रणालीको समझ लेना चाहिये । उसकी मान्यता है ।

१-पाञ्चभौतिक शरीरको कोई स्मरण रखनेका प्रयत्न न करे। व्यक्तिका जीवन-चरित, स्मारक, चित्रादि कुछ न रखा जाय, भले ही वह कितना महान हो।

२–केवल भगवान उनके अवतारोंका चरित एवं स्मारक रखे जायँ। उनके मन्दिर बनें।

३- जो व्यक्ति भगवच्चरितको व्यक्त करने में जितने अंशमें उपयोगी हैं, उनका उतने अंश तक वर्णन स्मरण किया जाय।

४-व्यक्तियोंमें केवल उनके और वह भी केवल वे चरित दिये जायँ जो धर्म, संस्कृति या आराधना प्रणाली 'पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं।

इसलिये हमारे इतिहास में अवतार-चरित तो पूरे के पूरे हैं। भक्तोंके चरित केवल भक्ति एवं भगवद दर्शन तक के हैं । राजाओं, तपस्वियों, ऋषियों एवं दूसरोंके चरित उतने हैं, जितने अंशमें वे धर्म, उपासना अथवा संस्कृति पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव डालने वाले हैं।

इतिहासके ग्रन्थोंमें दो ग्रन्थ मुख्य हैं-

१-महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण।

२-महर्षि वेदव्यास कृत महाभारत।

भगवान वेदव्यास कृत हरिवंश पुराण महाभारतका परिशिष्ट होनेसे इतिहास ही माना जाता है।

इनके अतिरिक्त अध्यात्म रामायण, योगवासिष्ठ आदि इतिहास के अनेक ग्रन्थ हैं।

प्राचीन इतिहास ग्रन्थों में राम-चरित और कृष्ण चरित का ही मुख्य रूप से वर्णन है।

जो लोग रामायण और महाभारतको इतिहास नहीं मानते, वे भूल जाते हैं कि देश में अब तक श्रीराम एवं श्रीकृष्णके वंश की अखण्ड परम्परा विद्यमान है। दूसरे जब पुराण भी हैं ही, इन ग्रन्थोंको इतिहास ऋषियोंने व्यर्थ नहीं कहा है।

पुराण

पुराणका अर्थ है प्राचीन। कितना प्राचीन इसका कोई नियम नहीं है। पुराण इतिहास नहीं है और इतिहास पुराण नहीं है। इस भेद को समझे बिना हिन्दूधर्म के इतिहासको समझ पाना असम्भव है।

पुराणका उद्देश्य इतिहास-वर्णन नहीं है। उसका उद्देश्य एक निष्ठा-विशेषका प्रतिपादन है। यह दूसरी बात है कि उसमें इतिहास भी हो।

एक पुराण एक निष्ठा- एक आध्यात्मिक साधन विशेष, एक इष्टका प्रतिपादन करनेके लिये प्रवृत्त हुआ है। उस निष्ठा, उस इष्ट, उस साधनके सर्वोपरि रूपका वर्णन करते हुए, उसके सहायक साधनों एवं अंगोपाङ्गों का उसमें वर्णन होता है । इसीलिये एक

पुराणमें एक कल्प विशेष की सृष्टि तथा घटनाओं को प्रमुखता दी गई होती है। अन्य कल्पोंका वर्णन उसमें संक्षिप्त रहा करता है।

सृष्टि विभिन्न कल्पोंमें विभिन्न नित्य लोकोंके माध्यम से व्यक्त होती है। अत: जिस इष्टके प्रतिपादनके लिये जो पुराण प्रवृत्त हुआ है, उस पुराणमें उस इष्टका परत्व तथा उसके नित्यलोक से जिस कल्पमें सृष्टि हुई, उस कल्प का वर्णन मुख्यरूपसे होता है।

पुराणोंमें जो घटनायें हैं, वे हैं तो इतिहास ही; किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि वह इतिहास क्रमबद्ध हो और एक ही कल्प का हो । जैसे श्रीमद्भागवतमें राजा परीक्षित तथा शुकदेवजी का वर्णन है। यह वर्णन इस कल्पके परीक्षितका नहीं है, जबकि भागवतमें जो श्रीकृष्ण-चरित है, वह इसी कल्पके, इसी मन्वन्तर की वर्तमान चतुर्युगीके द्वापरान्तका है। यह भी आवश्यक नहीं है कि जिस कल्प के परीक्षितका वर्णन है, उसी कल्पके शुकदेवजीका वर्णन हो।

राजा परीक्षित प्रत्येक कल्पमें होते हैं, और प्रत्येक कल्पमें शुकदेवजी होते हैं। प्रत्येक कल्पमें इनका सम्वाद होता है; किन्तु इनका चरित तथा सम्वाद प्रत्येक कल्पमें एक सा नहीं रहा करता । जैसे एक कल्पमें शुकदेवजीने राजा परीक्षितको देवी भागवत सुनाया है।

भगवान व्यास सर्वज्ञ हैं। उनके सम्मुख प्रत्येक कल्प की घटनायें प्रत्यक्षके समान हैं। पुराण-निर्माणमें उनका उद्देश्य

इतिहासका वर्णन तो है नहीं। वर्तमान कल्पका इतिहास वे महाभारतके रूपमें वर्णित कर चुके । पुराणमें एक निष्ठा, एक साधनको स्पष्ट करना तथा उसे आधार देना है । अतः उस साधन, उस निष्ठाके अनुरूप जो व्यक्ति प्राप्त होता है, जो उपदेश सम्वाद प्राप्त होता है, उसे वे उस पुराणमें एकत्र कर देते हैं। इस प्रकार पुराणोंमें जो हमें व्यक्ति, सम्वाद तथा उनका क्रम मिलता 'है, वह व्यासजीके सम्पादन का कौशल है। यह ऐसा ही है, जैसे मुझे वन में एक सिंह, एक भैंसा और एक शिकारी दिखाने हों और एक भवन भी। मैं एक सादे कागजपर एक वनका चित्र लेकर चिपका लू । किन्ही दूसरे चित्रोंसे काट कर उपयुक्त मुद्रामें सिंह तथा भैसेके चित्र ले लू और एक भवनका चित्र कहीं से काट लू और वनके चित्रके ऊपर इन्हें उपयुक्त स्थानोंपर चिपका कर पूरे चित्रका फोटो ले लू । अब फोटो में तो एक चित्र है-ऐसा चित्र जो मैं चाहता था; किन्तु वह चित्र मैंने बनाया नहीं है। अवश्य ही उसका प्रत्येक अंश बनाये चित्रों से लिया गया है। इसी प्रकार पुराणों का प्रत्येक व्यक्ति तथा घटना सत्य है । वह इतिहास है किसी न किसी कल्पका; किन्तु इतिहासके वे अंश नवीन क्रमसे, एक उद्देश्य विशेषसे एकत्र कर दिये गये हैं। इसीलिये ऋषि उस क्रमको पुराण कहते हैं, इतिहास नहीं कहते।

पुराणमें पूरी सृष्टि-प्रलयकी प्रक्रिया न आ जाय तो निष्ठाका सम्यक् प्रतिपादन नहीं होता। अतः प्रत्येक पुराण में यह पूरी

प्रक्रिया उस पुराणमें प्रतिपाद्य निष्ठाके अनुरूप आ जाती है। फलतः महापुराणोंके दस लक्षण माने गये हैं और पुराणके पाँच लक्षण।

पुराणोंके भेद

पुराणोंके चार भेद माने जाते हैं-१-महापुराण २-पुराण ३-अतिपुराण ४-उपपुराण।

इनमें से प्रत्येक १८ बतलाये जाते हैं। महापुराण तो १८ मिलते हैं; किन्तु शेष पुराण भारतमें पूरे नहीं मिलते।उनमें से जो मिलते भी हैं, उनकी गणना किसमें की जाय, इसके सम्बन्धमें बहुत विवाद है।

सुना है कि नैपाल राज्यपुस्तकालय में ये पूरे ७२ पुराण हैं। वे ब्राह्मीलिपिमें हैं। हस्तलिखित हैं। पत्राकार हैं। यदि यह बात सत्य है तो उनके नागरी लिपिमें मुद्रण की व्यवस्था अवश्य की जानी चाहिये। इससे केवल ग्रन्थ ही नहीं उपलब्ध होंगे, ग्रन्थोंका वर्ग-निर्णय भी हो जायगा और पाठ-निर्णय भी हो जायगा।

महापुराण

जिसमें दस-लक्षण हों अर्थात् दस विषयोंका प्रतिपादन हो, उन्हें महापुराण कहा जाता है। वे लक्षण हैं-

१. सर्ग-प्रकृतिसे पञ्चमहाभूत, इन्द्रियादि की सृष्टिका वर्णन।

२. विसर्ग-ब्रह्मासे लेकर प्राणियोंकी सृष्टि-वर्णन।

३. स्थान (स्थिति) - भगवानकी नित्य महिमाका वर्णन।

४. पोषण-भगवदनुग्रहका वर्णन।

५. अति-जीवोंकी कर्म वासनाओं तथा उनसे प्राप्त गतियोंका वर्णन।

६. मन्वन्तर-मनु तथा उनके वंशका वर्णन।

७. ईशानुकथा-भगवानके अवतार चरितोंका वर्णन।

८. निरोध-प्रलयोंका वर्णन।

९. मुक्ति मोक्षके स्वरूप तथा साधनों का वर्णन।

१०. आश्रय-परमतत्त्वका निरूपण।

१८ महापुराण

१-ब्रह्मपुराण

२-पद्मपुराण

३-विष्णुपुराण

४-शिव पुराण

५-श्रीमद्भागवत

६-नारदीयपुराण

७-मार्कण्डेय पुराण
८-अग्निपुराण
९-भविष्यपुराण
१०-ब्रह्मवैवर्तपुराण
११-लिंगपुराण
१२-वाराहपुराण
१३-स्कन्दपुराण
१४-वामनपुराण
१५-कूर्मपुराण
१६-मत्स्यपुराण
१७-गरुड़ पुराण
१८-ब्रह्माण्डपुराण

जैसे भगवान वेदव्यासजी ने वेदों का विभाग किया है, वैसे ही पुराणों का भी सम्पादन मात्र किया है। पुराण मूलत: व्यासजीकी रचना नहीं हैं। वे सृष्टिके आदि में ब्रह्माजी के मुख से ही प्रगट हुए हैं। वेदोंमें कई पुराणों के नाम मिलते हैं।

इतिहास पुराणं च पञ्चमं वेदमीश्वरः ।
सर्वेभ्यो एव वक्र भ्यो ससृजे सर्वदर्शनः ॥
-भागवत

सर्व समर्थ सर्वज्ञ ब्रह्माजीने इतिहास और पुराण जो पञ्चमवेद हैं, उन्हें अपने सभी मुखोंसे बनाया।

इन सब पुराणोंका निर्विविद और पूर्ण रूप आज मिलता नहीं है। सब पुराणोंकी विषय-सूची और श्लोक संख्या नारदीय पुराणमें है। उसके अनुसार श्लोक संख्या और विषय सब पुराणोंमें नहीं मिलते।

शिवपुराणके दो रूप मिलते हैं और उनमें बहुत पाठ भेद है। स्कन्दपुराण एक प्रचलित खण्डात्मक प्राप्त होता है और दूसरा संहितात्मक मिलता है। भविष्य पुराण चार स्थानोंसे छपा है और वे भिन्न-भिन्न हैं। लगता है कि तीनोंको मिलाकर भविष्यपुराण पूरा होता है। शेष एक पुराण या उपपुराण होगा।

बहुतसे लोग देवी-भागवतको महापुराण मानते हैं; किन्तु नारदीय पुराणमें श्रीमद्भागवतकी विषय-सूची दी गई है। पद्मपुराण तथा स्कन्दपुराणमें भी श्रीमद्भागवत के ही माहात्म्य हैं। अतः श्रीमद्भागवत को ही महापुराणों में गिनना अधिक उपयुक्त जान पड़ता है।

जो पुराण उपलब्ध हैं, उनमें श्लोक-संख्या नारदपुराण में कही गई श्लोक-संख्यासे प्रायः कम है। इसका अर्थ है कि पुराणोंके कुछ अंश लुप्त हुए हैं। उनमें प्रक्षिप्तांश बढ़ा तो है; किन्तु बहुत कम बढ़ा है और वह ढूंढकर पृथक किया जा सकता है।

पुराण

पुराणके पाँच लक्षण बतलाये गये हैं-

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशोमन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥

१-सर्ग-प्रकृतिसे पञ्चमहाभूत पर्यन्त सृष्टि।

२-प्रतिसर्ग (बिसर्ग)-प्राणि सृष्टिका विस्तार और लय।

३-वंश-सृष्टिकी आदि वंशावली।

४-मन्वन्तर-किस मनुका काल कब तक रहा और उस काल की मुख्य-मुख्य घटनायें।

५-वंशानुचरित- सूर्यवंश एवं चन्द्रवंश के राजाओं का संक्षिप्त वंश-वर्णन।

पुराण-उपपुराणादि

यह कहना कठिन है कि कौन-सा पुराण है, कौन-सा अतिपुराण है और कौन-सा उपपुराण है। अतः हम इनमें से जो प्राप्य हैं, उनकी नामावली मात्र दे रहे हैं। अवश्य ही वे पुराण, जिनके सम्बन्धमें यह विवाद है कि वे महा पुराण हैं या पुराण-निश्चित रूपसे पुराण तो हैं ही। ऐसे विवाद दो हैं -

१-शिवपुराण तथा वायुपुराणके सम्बन्धमें।

२-श्रीमद्भागवत तथा देवी -भागवतके सम्वन्धमें।

इसका अर्थ है कि वायुपुराण और देवी-भागवत तो निश्चित रूपसे पुराण हैं।

इनके अतिरिक्त निम्न ग्रन्थ प्राप्त होते हैं

१-गणेशपुराण २-सनत्कुमार पुराण ३-नृसिंह पुराण ४-वृहनारदीय पुराण

५-शिवधर्मोत्तर पुराण ६-दुर्वासा पुराण ७-कापिल पुराण ८-मानव पुराण९-उषनस पुराण १०-वारुण पुराण ११-कालिका पुराण १२-साम्ब पुराण १३-नन्दिकेश्वर पुराण १४-सौर पुराण १५-पाराशर पुराण १६-आदित्य पुराण १७-ब्रह्माण्डपुराण १८-माहेश्वर पुराण १६-भागवत पुराण । २०-वाशिष्ठ पुराण २१-कौर्म पुराण २२-भार्गव पुराण २३-आदि पुराण २४-मुद्गल पुराण २५-कल्कि पुराण २६-देवी पुराण २७-महाभागवत पुराण २९वृहदधर्म पुराण २६-परानन्द पुराण ३०-पशुपति पुराण

ऐसा नहीं है कि ये पुराण, अति पुराण और उप पुराण कम महत्वके हों और पीछेकी रचना माने जायें। इनमें से अनेक की चर्चा महाभारत तथा महापुराणोंमें आई है। इनमें केवल धर्म-चर्चा ही नहीं है, महापुराणों में और इनमें भी कथायें, धर्मोपदेश, आचार-विधान तो है ही, नाना प्रकार की कलाओं तथा विद्याओंका वर्णन भी है। ये पुराण हिन्दू धर्मके विश्व-कोष हैं।

इनकी भली प्रकार शोध की जाय तो प्रायः सभी कला एवं विद्याओंकी मूल कारिकायें इनमें से उपलब्ध हो जायेंगी।

५-स्मृति

स्मृतियाँ हिन्दूधर्म एवं समाजके विधान-ग्रन्थ हैं। हिन्दूधर्म तथा समाजका मुख्य सञ्चालन स्मृतियोंके द्वारा ही होता है। स्मृतियोंमें अर्थ, धर्म, काम एवं मोक्ष-चारों पुरुषार्थों का विवेचन है।

स्मृतियोंमें वर्ण-व्यवस्था, आश्रम-व्यवस्था, अर्थ-व्यवस्था, वर्णाश्रम-धर्म, विशेष अवसरों के कर्म, प्रायश्चित, शासन-विधान, दण्ड-व्यवस्था तथा मोक्ष के साधनों का वर्णन है।

जैसे श्रुति का अर्थ है समाधि में अथवा परम्परासे सुनी हुई-वेद-वाणी। इस प्रकार सुनी होनेसे वह श्रुति कहलाती है, उस प्रकार स्मृति का अर्थ है कि समाधिमें वेद-मन्त्रका जो अर्थ-दर्शन हुआ, समाधिसे उत्थित होनेपर स्मरणशक्ति के आधार पर उसे लिखा गया। इस प्रकार स्मरण करके लिखे जाने के कारण इन ग्रन्थों को स्मृति कहते हैं। स्मृतियों में वेदार्थ को ही लेकर चारों पुरुषार्थों के लिये उपयुक्त नियमों का निर्देश है।

परम प्रमाण श्रुति है। श्रुतिके अनुकूल स्मृति प्रमाण हैं और श्रुति-स्मृति-अनुकूल पुराण प्रमाण माने गये हैं।

स्मृति ग्रन्थ

इस समय सौ से अधिक स्मृतियाँ उपलब्ध हैं। उनमें से मुख्य-मुख्य थोड़ी-सी स्मृतियोंके नाम यहाँ दिये जा रहे हैं-

१-मनुस्मृति २-याज्ञवल्क्य स्मृति ३-अत्रिस्मृति ४-विष्णु स्मृति ५-हारीत स्मृति ६-औषनस स्मृति ७-आङ्गिरस स्मृति ८-यम स्मृति ९-आपस्तम्ब स्मृति १०-संवर्त स्मृति ११-कात्यायन स्मृति १२-वृहस्पति स्मृति १३-पराशर स्मृति १४-व्यास स्मृति १५-शङ्ख स्मृति १६-लिखित स्मृति १७-दक्षस्मृति १८-गौतम स्मृति १९-शाततप स्मृति २०-वशिष्ठ स्मृति २१-प्रजापति स्मृति आदि।

इनमें भी मनुस्मृति तथा याज्ञवल्क्य स्मृति बहुत प्रसिद्ध हैं। हिन्दू-सम्पत्तिका उत्तराधिकार याज्ञवल्क्य स्मृतिके 'दायभाग' के अनुसार ही माना जाता था। कलियुगके लिये मुख्य स्मृति पराशर स्मृति कही गई है।

६-दर्शन

'तत्त्वज्ञान साधक' शास्त्रका नाम दर्शन शास्त्र है। जिसमें सृष्टि-प्रलय, जीवके जन्म-मरणके कारण तथा गति पर विचार किया जाता है, उस शास्त्रको दर्शन-शास्त्र कहते हैं।

आपने ६ शास्त्र कहते लोगोंको सुना है। मुख्य दर्शन ६ हैं और इनको ही शास्त्र कहा जाता है। इनके नाम इस प्रकार हैं

१. न्याय दर्शन-महर्षि गौतम कृत

२. वैशेषिक दर्शन- महर्षि कणाद कृत।

३. पूर्वमीमांसा दर्शन- महर्षि जैमिनी कृत।

४. सांख्य दर्शन - महर्षि कपिल कृत।

५. योग दर्शन - महर्षि पतञ्जलि कृत।

६. उत्तरमीमांसा दर्शन (ब्रह्म सूत्र) - महर्षि व्यास कृत।

ये ६ वैदिक दर्शन हैं। इनके अतिरिक्त ६ अवैदिक दर्शन भी भारतमें प्रचलित हैं। इनमें १-चार्वाक का सर्वथा जड़कारणवादी नास्तिक दर्शन, बौद्ध मतके चार दर्शन और एक जैन-दर्शन (स्याद्वाद) । इनमें चार्वाक दर्शन का कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। अन्य ग्रन्थों में खण्डनके लिये चार्वाक के मतका उद्धरण आया है । बौद्ध एवं जैन दर्शनोंकी चर्चा उनके ग्रन्थोंका परिचय देते समय करेंगे।

जितने हिन्दू सम्प्रदाय हैं, उनका आधार उत्तर मीमांसादर्शन (ब्रह्मसूत्र) है, लेकिन ब्रह्मसूत्रके भाष्यके रूप में सम्प्रदायाचार्योंने पृथक-पृथक दार्शनिक मतोंका प्रतिपादन किया है। अद्वैतवाद और द्वैतवाद जैसे सर्वथा परस्पर विरोधी मत ब्रह्मसूत्रके भाष्यपर ही प्रतिष्ठित हैं। इस प्रकार ब्रह्मसूत्रके भाष्य रूपमें स्थित दार्शनिक मतोंकी संख्या लगभग एक दर्जन है।

इन सभी दर्शनों के भाष्य, टीकायें और इनपर स्वतन्त्र ग्रन्थ निर्माणको प्रक्रिया दीर्घकालसे अबतक चली आ रही है । अतः

इनके मुख्य-मुख्य ग्रन्थोंकी संख्या भी सहस्रोंमें है। कोई एक अच्छा पुस्तकालय केवल दर्शनसे सम्बन्धित ग्रन्थोंसे बन सकता है । इसलिये यहाँ हम बहुत ही संक्षिप्त रूपसे ग्रन्थोंमें भी मूल ग्रन्थों की चर्चा करेंगे।

१.न्याय-दर्शनके महषि गौतम कृत सूत्र प्राप्त हैं। इन सूत्रोंपर वात्स्यायन मुनिका भाष्य है। इस भाष्य पर उद्योतकार ने ब्रह्मसूत्र लिखा है। वार्तिक पर वाचस्पति मिश्रको न्यायवार्तिकतात्पर्य नामक टीका है। इस टीका की भी टीका उदयनाचार्यकृत 'तात्पर्य-शुद्धि' है। इस परिशुद्धि-पर वर्द्धमान उपाध्याय कृत टीका 'प्रकाश' है।

न्याय-दर्शन वैदिक मतमें भी है और बौद्ध-मतमें भी। मल्लनाग, न्यायस्थिति, धर्म कीर्ति और उद्योतकर-ये चार प्राचीन न्यायाचार्य माने जाते हैं । इनमें धर्म कीर्ति प्रसिद्ध बौद्ध नैयायिक हैं । दूसरे प्रसिद्ध बौद्ध नैयायिक दिङ्गनागाचार्यका न्याय ग्रन्थः 'प्रमाण-समुच्चय' पहिले बहुत प्रसिद्ध था।

वाचस्पति मिश्र कृत 'न्याय-कणिका' वैदिक विद्वानों के न्याय-ग्रन्थोंमें प्राचीन है।

श्रीगंगेश उपाध्यायने न्यायमें 'नव्यन्याय' का प्रचलन किया। इस प्रकार प्राच्य न्याय और नव्यन्याय यह दो शाखाय हो न्याय-दर्शनको हो गई। इन दोनो शाखाओ में बहुत ग्रन्थ लिखे गये और अब भी इनके सैकड़ों ग्रन्थ मिलते हैं।

२. महर्षि कणादके वैशेषिक दर्शनपर भाष्य नहीं प्राप्त होते। केवल मूल ग्रन्थ प्राप्त हैं।

प्रशस्त पादाचार्यके 'पदार्थ-धर्म-संग्रह' को कुछ लोग वैशेषिक दर्शनपर भाष्य कहते हैं; किन्तु वह भाष्य न होकर स्वतन्त्र ग्रन्थ ही है। अवश्य ही वह मूल सूत्रों के आधार पर निर्मित है।

न्याय और वैशेषिक दर्शन एक दूसरे के अनुपूरक हैं। इससे पृथक से वैशेषिक दर्शनपर ग्रन्थ-निर्माण नहीं हुआ। न्याय दर्शनके ग्रन्थों में ही वैशेषिक के मत की आलोचना-प्रत्यालोचना हुई हैं।

३-पूर्वमीमांसा दर्शन–महर्षि जैमिनी कृत- इसके मूल सूत्रों पर श्रीशबर स्वामीका भाष्य है। आचार्य कुमारिल भट्ट का 'तन्त्र वार्तिक' तथा 'श्लोक वार्तिक' भी इन्हीं सूत्रों पर हैं।

श्रीमाधवाचार्यने पूर्वमीमांसा दर्शन पर 'जमिनीय न्यायमाला विस्तार' नाम का भाष्य लिखा है।

'भट्टदीपिका' मीमांसा का एक उत्तम ग्रन्थ है। इसके अतिरिक्त और भी सैकड़ों ग्रन्थ कर्म-सिद्धान्त पर प्राप्त होते हैं।

४-सांख्य-दर्शनके प्रणेता महर्षि कपिल हैं। आजकल जो सांख्य दर्शनका सूत्र-ग्रन्थ ५२४ सूत्रोंका ६ अध्यायों वाला प्राप्त होता है, वह मूल ग्रन्थ है, इस बातपर सन्देह किया जाता है।

ईश्वरकृष्ण कृत 'सांख्यकारिका' अब सांख्य-दर्शनका प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है। इस पर कई टीकायें उपलब्ध हैं।

'सांख्यतत्त्वकौमुदी' जैसे अनेक ग्रन्थ इस दर्शनपर प्राप्त होते हैं।

५-योग दर्शन-इसके प्रणेता हैं महर्षि पतञ्जलि । वस्तुतः इस दर्शनमें भी सांख्य-दर्शनके ही सिद्धान्त माने गये हैं, केवल 'पुरुष विशेष ईश्वर' और माना गया है । इसलिये सांख्यका नाम निरीश्वर सांख्य और योगका नाम सेश्वर सांख्य पड़ गया।

योग दर्शनपर महर्षि कृष्णद्वैपायनवेदव्यासजीका भाष्य है। इसके अतिरिक्त वाचस्पति मिश्रका वार्तिक है।

विज्ञानभिक्षुका योगसार संग्रह एक अच्छा ग्रन्थ योग पर है।

योग दर्शनके सूत्रोंपर भोजराजकी एक वृत्ति है।

पीछे योगशास्त्र में तन्त्र का समावेश हो जानेसे हठयोग की शाखा तथा और कई क्रियाओं का विस्तार हो गया। इससे योगपर क्रिया साधन प्रधान ग्रन्थोंकी रचना हुई । इनमें मुख्य हैं -

१-शिव संहिता २-हठयोगप्रदीपिका ३-घेरण्ड संहिता।

६-उत्तर मीमांसा दर्शन (ब्रह्मसूत्र) इसके प्रणेता हैं, महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यास।

वेदों का तात्पर्य क्या है?

इस प्रश्न का उत्तर वेदोंपर आस्था रखने वालेको अवश्य चाहिये । इसी तात्पर्यको स्पष्ट करने के लिये उत्तर मीमांसा दर्शनका प्रणयन हुआ है। ब्रह्म अर्थात् वेदको एक सूत्र में ग्रथित

करने, उसका तात्पर्य स्पष्ट करने के कारण इस दर्शन का नाम ब्रह्मसूत्र है।

इस दर्शन को वेदान्त दर्शन भी कहते हैं; क्योंकि वेदका अन्तिम तात्पर्य (परमतात्पर्य) इसी के द्वारा जाना जाता है । क्योंकि यह दर्शन ब्रह्मसूत्र है-श्रुतिके मन्त्रों को एक सूत्रमें ले आता है, इसका अर्थ श्रुतिके मन्त्रों के द्वारा ही होता है। कौन-सा सूत्र किन-किन मन्त्रोंके आधार पर है, यह बात प्रायः सभी आचार्यों ने अपने भाष्यों में स्पष्ट की है।

प्रस्थानत्रयी

वेद एवं उपनिषदमें सभी पुरुषार्थों का वर्णन है। सभी साधनाओं, सम्प्रदायों, सिद्धान्तोंका मूल उपनिषदों में तथा मूल संहिताओं में विद्यमान है। ऐसी अवस्थामें वेदका ठीक-ठीक तात्पर्य क्या है- इस विषयमें सामान्य व्यक्तिको मतिभ्रम होना स्वाभाविक है। इसलिये आचार्यों ने वेदोंके परमतात्पर्य निर्णयके लिये तीन आधारोंको अपनाना उचित माना। इन तीनोंका सम्मिलित नाम प्रस्थानत्रयी है।

इस प्रस्थानत्रयी में पहिला प्रस्थान श्रुति प्रस्थान कहलाता है। इसमें ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तरीय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक, कौषीतिकी और श्वेताश्वतर-ये बारह उपनिषद हैं।

दूसराप्रस्थान न्याय प्रस्थान कहा जाता है। यह ब्रह्मसूत्र है। इसीका नाम उत्तर मीमांसा, शारीरिक मीमांसा तथा वेदान्त सूत्र भी है।

तीसरे प्रस्थान को स्मृति प्रस्थान कहते हैं । यह भगवद्गीता है।

कुछ वैष्णवाचार्य प्रस्थान चतुष्टय को प्रमाण मानते हैं । वे चतुर्थ प्रस्थान पुराण प्रस्थान कहते हैं और इसमें श्रीमद्भागवतको मानते हैं।

प्राचीन काल में किसी आचार्यका मत तब तक प्रामाणिक नहीं माना जाता था, जब तक प्रस्थानत्रयीके द्वारा वह आचार्य अपने मतको पुष्ट न करे । फलतः इन प्रस्थानत्रयीके ग्रन्थोंपर भाष्य, टीका आदिका बहुत विस्तार हुआ और फिर उन आचार्यों के अनुयायियों ने अपने सम्प्रदायके अनुसार ग्रन्थोंकी रचना भी की। इस प्रकार प्रत्येक सम्प्रदायके ग्रन्थोंकी बहुत बड़ी संख्या है। इन भाष्यादि ग्रन्थोंका उल्लेख साम्प्रदायिक ग्रन्थों के प्रकरण में आगे किया जायेगा।

७-निबन्ध-ग्रन्थ

ये एक प्रकारके स्मृति-ग्रन्थ ही हैं और स्मृतियोंके समान ही धर्म-निर्णयमें प्रामाणिक माने जाते हैं।

यद्यपि इनकी रचना मध्यकालमें हुई है। किन्तु ये स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं हैं। स्मृतियों तथा पुराणों में जो धर्माचरण के निर्देश हैं, उनका ही इनमें बड़े विस्तारसे संकलन किया गया है।

स्मृति-पुराणोंके वाक्योंमें जहाँ विभिन्नता दीखती है, अथवा जो बातें स्पष्ट नहीं हैं, निबन्धोंमें उनकी एक वाक्यता तथा स्पष्टीकरण किया गया है। जैसे किसी की श्राद्धतिथि एकादशी हो तो क्या किया जाय? एकादशी को अन्न-भोजन वर्जित हैं और श्राद्धमें ब्राह्मणको विहित अन्न खिलाना है। ऐसे प्रश्नोंका विस्तार से विचार एवं निर्णय निबन्ध ग्रन्थों में हुआ है । विस्तार पूर्वक प्रमाण देकर निबन्धकार विषय-विवेचन करते हैं। अतः इनके बिना स्मृतियोंका तात्पर्य अनेक स्थानों पर स्पष्ट नहीं हो पाता। निबन्ध ग्रन्थ भी बहुत हैं और उनमें से भी बहुत अप्राप्य हो गये हैं । यहाँ मुख्य- मुख्य निबन्ध ग्रन्थों की ही सूची दी जा रही है-

जीमूत वाहनके तीन ग्रन्थ हैं,

१-दायभाग २-काल विवेक ३-व्यवहार नातृका ।

शूलपाणिके स्मृतिविवेकके केवल चार खण्ड प्राप्त होते हैं । सम्पूर्ण ग्रन्थ नहीं मिलता।

रघुनन्दन कृत स्मृतितत्त्व अट्ठाईस भागोंका बहुत विशाल ग्रन्थ है।

अनिरुद्धके तीन ग्रन्थ हैं-१-हारलता २-आशौच विवरण ३-पितृदयिता।

बल्लाल सेनके चार ग्रन्थ हैं-

१-आचार सागर २-प्रतिष्ठा सागर ३-अद्भुत सागर ४-दान सागर।

ये इतने विशाल ग्रन्थ हैं कि इनके सहारे पुराणोंकी पाठ-शुद्धि की जा सकती है।

श्रीदत्त उपाध्यायके तीन ग्रन्थ हैं-

१-आचारादर्श २-समयप्रदीप ३-श्राद्धकला।

चण्डेश्वरका विशाल ग्रन्थ स्मृतिरत्नाकर है।

वाचस्पति मिश्रके बारह ग्रन्थ हैं-

१-विवाद चिन्तामणि २-आचार चिन्तामणि ३-आह्निक चिन्तामणि ४-कृत्य चिन्तामणि ५-तीर्थ चिन्तामणि ६-व्यवहार चिन्तामणि ७-शुद्धि चिन्तामणि ८-श्राद्ध चिन्तामणि ९-तिथि निर्णय १०-द्वैत निर्णय ११-शुद्धि निर्णय १२-महादान।

देवण्ण भट्टकी स्मृति-चन्द्रिका बड़ा ग्रन्थ है।

हेमाद्रिकाचतुवर्ग चिन्तामणि न केवल कई खण्डों में है, इसे धर्मशास्त्रका विश्वकोष कहना उपयुक्त है।

माधवाचार्य के सात ग्रन्थ हैं-

१-काल माधव २-पराशर माधव ३-दत्तक मीमांसा ४-गोत्र-प्रवर-निर्णय ५-मुहूर्त माधव ६-स्मृति संग्रह ७-व्रात्यस्तोम पद्धति।

नारायण भट्टके तीन ग्रन्थ हैं-

१-त्रिस्थली सेतु २-अन्त्येष्ठि पद्धति ३-प्रयोगरत्नाकर।

नन्दपण्डितके चार ग्रन्थ हैं-

१-श्राद्ध कल्पलता २-शुद्धि चन्द्रिका ३-तत्त्वमुक्तावली ४-दत्तक मीमांसा।

कमलाकर भट्टके बाईस ग्रन्थ हैं। इनमें से ६ मुख्य हैं-

१-निर्णय सिन्धु २-शूद्र कमलाकर ३-दान कमलाकर ३-पूर्त कमलाकर ४-वेद रत्न ५-विवाद ताण्डव ६-प्रायश्चितरत्न।

नीलकण्ठ भट्टका भगवन्त भास्कर अनेक खण्डोंका बहुत बड़ा ग्रन्थ है।

इसी प्रकार मित्र मिश्रा का वीरमित्रोदय भी अनेक खण्डों वाला बहुत बड़ा ग्रन्थ है।

लक्ष्मीधर का कृत्यकल्पतरु भी कई भागों में है।

जगन्नाथ तर्कपञ्चानन का विवादार्णव कानून की दृष्टिसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

काशीनाथ उपाध्याय का धर्म-सिन्धु बहुत प्रख्यात ग्रन्थ है।

इनके अतिरिक्त निर्णयामृत, पुरुषार्थ-चिन्तामणि आदि बहुतसे निबन्ध ग्रन्थ हैं।

८-आगम

वेदोंसे लेकर निबन्ध ग्रन्थों तक की जो परम्परा श्रुति स्मृति-पुराणोंपर अबलम्बित है, उसे 'निगम' कहा जाता है। इसी के

समान जो दूसरी अनादि परम्परा तन्त्र-साहित्य की है, उसको आगम कहा जाता है।

आगमके दो भाग हैं-दक्षिणागम (समय मत) और बामागम (कौल मत) ।

सनातन धर्म में निगम तथा आगम (दक्षिणागम) दोनों को प्रमाण माना जाता है। श्रुतियों में ही दक्षिणागम का मूल है और पुराणों में उनका विस्तार हुआ है। इस आगम शास्त्रका विषय उपासना है। आगम के तीन मुख्य भेद हैं-

१-वैष्णवागम २-शैवागम ३-शाक्तागम।

देवताका स्वरूप, गुण, कर्म, उनके मन्त्रोंका उद्धार, मन्त्र, न्यास, यन्त्र, ध्यान, पूजा-विधि, स्तोत्र, सहस्त्रनामादि का विवेचन आगम-ग्रन्थों में होता है।

वैष्णावागम

वैष्णवागमको स्मृतियोंके समान प्रमाण माना जाता है।

पाञ्चरात्र संहितायें और बैखानस आगम ये दो प्रकार के ग्रन्थ वैष्णवागम में मिलते हैं।

पाञ्चरात्रि संहिताओं की संख्या बहुत बड़ी थी; किन्तु अब केवल तेरह प्राप्त होती हैं-१-अहिर्बुध्न संहिता २-ईश्वर संहिता ३-कपिञ्जल संहिता ४-जयाख्य संहिता ५-पराशर संहिता ६-पाद्मतन्त्र ७- वृहद्ब्रह्म संहिता ८-भारद्धाज संहिता ९-लक्ष्मीतन्त्र

१०-विष्णु तिलक ११-श्रीप्रश्न संहिता १२-विष्णु संहिता १३-सात्वत संहिता।

शैवागम

कहा जाता है कि भगवान शिवके मुखसे २८ तन्त्र प्रकट हुए। उपतन्त्रोंको मिलाकर इनकी संख्या २०८ है। इनमें भी ६४ मुख्य माने गये हैं। लेकिन ये सब उपलब्ध नहीं हैं।

शिवाचार्य के प्रामाणिक ग्रन्थ तेरह हैं-१-पाशुपत सूत्र २-नरेश्वर परीक्षा ३-तत्त्व संग्रह ४-तत्वत्रय ५-भोग कारिका ६-मोक्षकारिका ७-परमोक्षनिरास कारिका ८-श्रुति सूक्ति माला ९-चतुर्वेद-तात्पर्य-संग्रह १०-तत्त्व प्रकाशिका ११-सूत संहिता १२-नादकारिका १३-रत्नत्रय।

वीरशैवमतका प्रामाणिक ग्रन्थ सिद्धान्त शिखामणि है।

प्रत्यभिज्ञामें ९२ आगम प्रमाण माने जाते हैं। उनमें से तीन मुख्य है-

१-सिद्धान्त तन्त्र २-नामक तन्त्र ३-मालिनी तन्त्र।

इन तीनोंको 'त्रिक्' 45 कहते हैं। ये शिव सूत्रपर आधारित हैं।

इनके अतिरिक्त स्पन्द सर्वस्व, शिव-दृष्टि, परात्रिशिका, त्रिवृत्ति, ईश्वर प्रत्यभिज्ञाकारिका, सिद्धित्रयी, शिवस्तोत्रावली, तन्त्रालोक आदि इस मतके प्रधान ग्रन्थ हैं।

शाक्तागम

सात्विक, राजस और तामस भेद से शाक्ततन्त्र के तीन भेद हैं। इनमें से सात्विक ग्रन्थोंको तन्त्रया आगम कहाजाता है। राजस ग्रन्थोंको यामल कहते हैं। तामस ग्रन्थोंका नाम डामर है। दैत्यमानव, असुरमानव ये भेद स्वभावानुसार सदा विद्यमान रहा है। इन सबके लिये उत्थानका साधन तो होना ही चाहिये। जो जिस स्वभाव-का है, उसके अनुरूप साधन ही वह अपना सकता है। भले सबको शिखरपर पहुंचाना हो; किन्तु जो जहाँ खड़ा है, उसके चढ़ने का मार्ग तो वहीं से प्रारम्भ होगा। इसलिये राजस, तामस प्रकृतिके लोगोंको प्रवृत्तिको क्रमशःनियन्त्रित करके सत्वोन्मुखी बनानेके लिये इन राजस तामस ग्रन्थोंका प्रणयन हुआ है।

असुरोंकी प रम्पराका मुख्य शास्त्र बामागम है।

शाक्तागममें ६४ ग्रन्थ मुख्य माने जाते हैं; किन्तु अब सब प्राप्त नहीं होते। केवल आठ उपनिषद् तन्त्रमतके प्रतिपादक प्राप्त होते हैं-१-कौलोपनिषद् २-अरुणोपनिषद् ३- अद्वैतभावोपनिषद् ४-भावनोपनिषद् ५-वहवृन्वोपनिषद् ६-त्रिपुरोपनिषद् ७-कालिकोपनिषद् ८-तारोपनिषद्। इनपर भाष्य-टीकायें आदि बहुत हैं।

मिश्र मार्ग के आठ ग्रन्थ हैं-१-चन्द्रक तन्त्र २-ज्योत्स्ना तन्त्र ३-कलानिधि तन्त्र ४- कुलार्णवतन्त्र ५-कुलेश्वरी तन्त्र ६-भुवनेश्वरी तन्त्र ७- वार्हस्पत्य तन्त्र

८-दुर्वासस तन्त्र ।

समयाचारमें 'शुभागमपञ्चक' के नामसे पाँच संहितायेंप्रमाण मानी जाती हैं-१-वाशिष्ठ संहिता २-सनक संहिता३-शुक संहिता ४-सननंदन संहिता ५-सनत्कुमार संहिता।

शाक्ततंत्रो की संख्या सहस्त्र से भी अधिक है; किन्तु उपलब्ध ग्रन्थोंमें मुख्य-मुख्य के नाम निम्न हैं-

१-कुलार्णव तन्त्र २-कुलचूड़ामणि तन्त्र ३-तन्त्रराज४-शक्तिसंगमतन्त्र ५-कालीविलास तन्त्र ६-ज्ञानर्णव तन्त्र ७-नामकेश्वर तन्त्र ७-महानिर्वाण तन्त्र ९-रुद्रयामल१०-त्रिपुरा रहस्य ११-दक्षिणामूर्ति संहिता १२-प्रपंचसार।

शारदा तिलकमें तान्त्रिक रहस्योंका अच्छा संग्रह है।

तन्त्रार्णव तथा मन्त्रमहारर्णव ये दोनों ग्रन्थतन्त्रशास्त्रके विश्वकोष हैं ।

श्रीविद्याकी दो सन्तान-परम्परामें-से लोपा-मुद्राकीसन्तान-परम्परा लुप्त ही हो गई है।

इन तन्त्र ग्रन्थोंमें भी बहुतों पर भाष्य, टीका, कारिका तथा सार संक्षिप्त ग्रन्थ हैं ।

तन्त्र ग्रन्थोंमें सक्षम विद्याओंका बड़ा भारी भण्डार है। कहा जाता है कि इन उपलब्ध ग्रन्थोंके अतिरिक्त कई सौ तन्त्र ग्रन्थ नेपालमें सुरक्षित हैं। देशमें भी ऐसे तन्त्र ग्रन्थों की बहुत बड़ी संख्या है जो अज्ञात है। जो नाम प्राप्त हैं, उनमें मुख्य-मुख्यकी सूची दी जा रही है -

१-स्वतन्त्र तन्त्र २-फेत्कारीतन्त्र ३-उत्तरतन्त्र ४-नीलतन्त्र ५-वीरतन्त्र ६-कुमारीतन्त्र ७-कालीतन्त्र ८-नारायणी तन्त्र ९-तारिणी तन्त्र १०-बाला तन्त्र ११-समयाचार तन्त्र १२-भैरवतन्त्र १३-भैरवीतन्त्र १४-त्रिपुरातन्त्र १५-वामकेश्वर तन्त्र १६-कुक्कुटेश्वर तन्त्र १७- मातृका तन्त्र १८-सनत्कुमार १९-विशुद्धेश्वर तन्त्र २०-सम्मोहन तन्त्र २१-गौतमीय तन्त्र २२-वृहद् गौतमीय तन्त्र २३-भूत भैरव तन्त्र २४-चामुण्डा तन्त्र २५-पिंगला तन्त्र २६-वाराही तन्त्र २७-मुण्डमाला तन्त्र २८-योगिनी तन्त्र २९-मालिनी विजय तन्त्र ३०-स्वच्छन्द भैरव तन्त्र ३१-महातन्त्र ३२-शक्ति तन्त्र ३३-चिन्तामणि तन्त्र ३४-उन्मत्त भैरव तन्त्र ३५-त्रैलोक्यसार तन्त्र ३६-विश्वसार तन्त्र ३७-तन्त्रामृत ३८-महाफेत्कारी तन्त्र ३६-वायवीय तन्त्र ४० तोडल तन्त्र ४१- मालिनी तन्त्र ४२-ललिता तन्त्र ४३-त्रिशक्ति तन्त्र ४४- राजराजेश्वरी तन्त्र ४५-महामोहवरोत्तर तन्त्र ४६-गवाक्ष तन्त्र ४७-गान्धर्व तन्त्र ४८-त्रैलोक्यमोहन तन्त्र ४९-हंसपारमेश्वर तन्त्र ५०-हंसमाहेश्वर तन्त्र ५१-कामधेनु तन्त्र ५२-वर्ण विलास तन्त्र ५३-माया तन्त्र ५४-मन्त्रराज ५५-कुब्जिका तन्त्र

५६-विज्ञानलतिका ५७-लिंगगम ५८-कालोत्तरतन्त्र ५९-ब्रह्मयामल ६०-आदित्ययामल ६१-रुद्रयामल ६२-वृहद्यामल ६३-सिद्धयामल ६४-कल्प सूत्र।

इनके अतिक्ति भी कई सौ तन्त्र ग्रन्थ हैं।

९-सम्प्रदाय ग्रन्थ

१-वैष्णव २-शैव ३-शाक्त ४-सौर ५-गाणपत्य

ये पाँच पौराणिक सम्प्रदाय हैं। ये पांचों ही उपासक सम्प्रदाय हैं। इनमें से सौर तथा गाणपत्य सम्प्रदाय के इतने कम लोग देशमें रहे हैं कि इनको लुप्तप्राय माना जाता है। इन दोनों सम्प्रदायोंके ग्रन्थोंका विस्तार नहीं हुआ है।

चतु: वैष्णव सम्प्रदाय कहा तो जाता है; किन्तु वैष्णव सम्प्रदाय चार ही नहीं हैं। १-श्रीविष्णुस्वामी सम्प्रदाय २-श्रीरामानुज सम्प्रदाय ३-श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय ४-श्रीमध्व सम्प्रदाय ५-श्रीवल्लभ सम्प्रदाय ६-श्रीरामानन्द सम्प्रदाय ७-श्रीमध्वगौड़ेश्वर सम्प्रदाय ८-श्रीहितहरिवंश सम्प्रदाय ९-श्रीहरिदास सम्प्रदाय आदि वैष्णवोंके अनेक सम्प्रदाय है।

इनमें से श्रीविष्णु स्वामीका कोई ग्रन्थ अब उपलब्ध नहीं है। श्रीहित हरिवंशजी तथा स्वामी श्रीहरिदासजी ने भाष्य नहीं लिखे। इनके वाणी ग्रन्थ हैं।

शेष सभी आचार्योंने ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखे हैं। मध्वगौड़ीय सम्प्रदायका भाष्य श्री बलदेव विद्याभूषणने लिखा है।

गीता तथा बारहों उपनिषदोंपर अब इन सब सम्प्रदायोंके भाष्य नहीं मिलते हैं। लेकिन इनमें से श्रीरामानुज सम्प्रदाय और श्रीमध्वगौड़ेश्वर सम्प्रदायके विद्वानोंके ग्रन्थों की संख्या बहुत बड़ी है। इन साम्प्रदायिक ग्रन्थोंको अपने सम्प्रदाय में शास्त्रके समान ही प्रमाण माना जाता है । जैसे श्री रामानुज सम्प्रदायमें आचार्य के ग्रन्थोंके अतिरिक्त आल्वार संतोंके ग्रन्थों की एक बड़ी संख्या है। सहस्रगीति जैसे ग्रन्थ बहुत आदरणीय माने जाते हैं ।

मध्वगौडेश्वर सम्प्रदायमें श्री रूप गोस्वामी, श्री सनातन गोस्वामी, श्री जीव गोस्वामी आदिके ग्रन्थोंको शास्त्र ग्रन्थ का ही सम्मान प्राप्त हैं। इस सम्प्रदायके ग्रन्थोंकी संख्या भी कई सौ है।

निम्बार्क, मध्व, बल्लभ सम्प्रदायमें आचार्यों के भाष्य के अतिरिक्त भी बहुत से ग्रन्थ हैं जो शास्त्री ग्रन्थों के समान ही प्रमाण माने जाते हैं।

ब्रह्म सूत्र पर भाष्य किये बिना कोई सम्प्रदायाचार्य पहिले नहीं माना जाता था। उपलब्ध ब्रह्मसूत्र भाष्यों में वैष्णवाचार्योंके अतिरिक्त श्रीशङ्कराचार्य, श्रीकण्ठाचार्य. श्रीभास्कराचार्य तथा विज्ञान भिक्षु के भाष्य मिलते हैं।

श्रीशङ्कराचार्य ने निगुण अद्वय तत्त्वका प्रतिपादन किया है। प्रस्थानत्रयीके सब ग्रन्थोंपर आचार्यका भाष्य है। इन भाष्योंपर अनेक व्याख्या, टीका, विवरण आदि हैं।

अद्वैतवादके ग्रन्थोंमें श्रीशङ्कराचार्यजी के ग्रन्थों के अतिरिक्त सहस्रों ग्रन्थ हैं। इनमें मुख्य एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थ भी शताधिक हैं और अब तक ग्रन्थ-निर्माण चल रहा है। भामती, अद्वैत सिद्धि, खण्डनखण्ड खाद्य, पञ्चदेशी आदि शताधिक संस्कृतके ग्रन्थ हैं, तो विचार सागर जैसे हिन्दीके भी कुछ ग्रन्थों को बहुत प्रचार एवं सम्मान प्राप्त है।

शैव एवं शाक्ताचार्योंने भी ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखे हैं । शैवाचार्यों तथा शाक्तग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय पीछे आगम-ग्रन्थों में आ चुका है।

१०-वाणी-ग्रन्थ

मध्यकालसे अब तक जो सम्प्रदाय हिन्दू धर्म में बने हैं, उन सम्प्रदायोंमें उनके आचार्यो की वाणियाँ ही प्रमाण मानी जाता है ।

मध्यकालसे एक विशेष प्रवृत्ति समाजमें आई। इन संत-महात्माओं के सम्प्रदायोंमें वेद, उपनिषद्, स्मृति पुराणादिकी लगभग उपेक्षा कर दी गई। अपने आचार्यो की वाणियों को ही परम प्रमाण माना जाने लगा। जबकि प्राचीन सम्प्रदाय श्रुति-

स्मृति-पुराण पर अपना आधार मानते थे और अपने अनुकूल शास्त्र का अर्थ करते थे।

इन मध्यकालीन सम्प्रदायों में कबीर पंथ, सिख, दादू पंथ, राधास्वामी मत, रामस्नेही, प्रणामी, चरणदासी आदि बहुत से सम्प्रदाय हैं।

कबीर पंथमें कबीर साहब के शब्द, साखी आदि वाणियाँ प्रमाण मानी जाती हैं।

सिख गुरु ग्रन्थसाहबको प्रमाण मानते हैं। इसमें सात गुरुओंकी वाणी तथा कुछ अन्य संतोंके भी पद हैं।

इसके अतिरिक्त जपुजी, दशम अन्य आदि भी मान्य धार्मिक ग्रन्थ हैं।

इसी प्रकार दादू पंथ, प्रणामी सम्प्रदाय, राधास्वामी सम्प्रदायादिमें उन-उन सम्प्रदायों के आचार्यों की वाणियाँ हो परम प्रमाण मानी जाती हैं।

श्री हितहरिवंशजी तथा श्री हरिदासजीके सम्प्रदायमें, चरणदासी तथा रामस्नेही सम्प्रदायमें श्रुति-स्मृति पुराणादिको मान्यता प्राप्त है; किन्तु अपने आचार्यों की वाणियों को शास्त्र-कोटि का तथा परम प्रमाण माना जाता है।

श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी का रामचरितमानस उत्तर भारत के बहुत बड़े भाग में शास्त्र कोटि का और उसी प्रकार प्रमाण

माना जाता है। कुछ थोड़े विद्वानोंको छोड़ कर रामानन्द संप्रदायमें परम प्रमाण ग्रन्थ श्रीरामचरित मानस माना जाता है।

प्रत्येक सम्प्रदायमें ही वाणी-ग्रन्थ बहुतसे हैं। उनकी सूची दे पाना सम्भव नहीं है।

सम्प्रदायके अपने ग्रन्थ दूसरे सम्प्रदायमें प्रमाण नहीं माने जाते । इसलिये भी उनकी सूची देना पुस्तकको बढ़ाना ही होगा।

११-जैन-ग्रन्थ

जैनों में दो सम्प्रदाय है-१-श्वेताम्बर और २-दिगम्बर ।

इसमें श्वेताम्बर सम्प्रदायके ग्रन्थोंकी संख्या बहुत बड़ी है।

दिगम्बर जैन सम्प्रदायमें भी कम ग्रन्थ नहीं हैं। जैनों के दार्शनिक ग्रन्थ, व्याकरण, ज्योतिष आदि सभी विषयोंपर प्रचुर ग्रन्थ हैं। मुख्य धर्मग्रन्थ जैन-पुराण हैं, जिन्हें दोनों जैन सम्प्रदाय प्रमाण मानते हैं।

चौबीस तीर्थङ्कर जैनोंमें हुए हैं। इन्होंकी कथाके प्रसङ्गमें चौबीस महापुराण जैनधर्म में हैं।

१-आदिपुराण २-अजितनाथ पुराण ३ सम्भवनाथ पुराण ४-अभिनन्दी पुराण ५-मुमतिनाथ पुराण ६-पद्म प्रभ पुराण ७-सुपार्श्व पुराण ८-चन्द्रप्रभ पुराण ९-पुष्पदन्त पुराण १०-शीतलनाथ पुराण

११-श्रेयांस पुराण १२ वासु पूज्य पुराण १३-विमलानाथ पुराण १४-अनन्तजित पुराण १५-धर्मनाथ पुराण १६-शान्तिनाथ पुराण १७-कुण्डनाथ पुराण १८-अरनाथ पुराण १९-मल्लिनाथ पुराण २०-मुनि सुब्रत पुराण २१-नेमिनाथ पुराण २२-आरिष्ट नेमि पुराण २३-पार्श्वनाथ पुराण २४-सम्मति पुराण।

रविसेनका पद्म पुराण, जिनसेनका अरिष्टनेमि पुराण (हरिवंश), जिनसेनका ही आदि पुराण और गुण भद्रका उत्तर पुराण ये दिगम्बर जैन सम्प्रदायके पौराणिक तत्त्वको भली प्रकार स्पष्ट कर देते हैं।

आदि पुराण और उत्तर पुराणमें चौबीस तीर्थङ्कर, बारह चक्रवर्ती, नव बासुदेव, नव शुल्क बल, नव विष्णु इस प्रकार तिरसठ महापुरुषोंका वर्णन रहनेके कारण दोनों पुराणों को 'त्रिषष्ठयवयवी पुराण कहा जाता है।

इनके अतिरिक्त केशव सेन कृष्णजिष्णुका कर्णामृत पुराण और श्रीभूषण सूरिका पाण्डव पुराण है। मलयालम में अनेक जैन पुराणोंके होने की बात भी सुनी जाती है।

१२-बौद्ध-ग्रन्थ

बौद्धमत चार दर्शनों तथा तीन सम्प्रदायोंमें विभक्त है। बौद्ध दार्शनिक मत हैं-१-माध्यमिक २-योगाचार ३-सौतान्त्रिक ४-वैभाषिक।

बौद्ध सम्प्रदाय हैं - १-हीनयान २-महायान ३-बज्रयान।

बौद्ध मतका मूल ग्रन्थ त्रिपिटक है। कथा-साहित्यमें बुद्धकी 'जातक कथायें' प्रसिद्ध हैं।

बौद्ध दर्शन एवं तन्त्र बहुत विस्तृत है। संस्कृत तथा पालीमें बौद्ध ग्रन्थोंकी संख्या भी बहुत बड़ी है।

बौद्धचित्त-विवरण वैभाषिक मतका मुख्य ग्रन्थ है। विवेक-विलासमें बुद्ध-दर्शनके चार भेद होने के कारणको स्पष्ट किया है।

नेपालके बौद्धों में नौ पुराण माने जाते हैं। यहाँ उन का नाम मात्र दिया जा रहा है-

१-प्रज्ञापारमिता पुराण २-गण्डव्यूह पुराण ३-समाधिराज पुराण ४- लंकावतार पुराण ५-तथागत गुह्यक पुराण ६-सद्धर्मपुण्डरीक पुराण-७-बुद्ध पुराण (ललित विस्तर पुराण) ८-सुवर्णप्रभा पुराण १-दशभूमीश्वर पुराण

इन नौ के अतिरिक्त दो पुराण और प्रचलित हैं-

१-वृहत् स्वयम्भुव पुराण २-मध्यम स्वयम्भुव पुराण।

चीन में भी कुछ बौद्ध पुराण थे; किन्तु अब उनके सम्बन्धमें कोई जानकारी मिलना कठिन है।

तन्त्र

बौद्ध-धर्मका वज्रयान सम्प्रदाय तान्त्रिकोपासनाका सम्प्रदाय है । बौद्ध तन्त्रोंकी मान्यता भी शाक्त तन्त्रोंके समान ही है। सब बौद्ध तन्त्र-ग्रन्थोंके तो नाम भी उपलब्ध नहीं हैं । मुख्य ग्रन्थोंके नाम यहाँ दिये जा रहे हैं -

१-प्रमोद महायुग २- परमार्थ सेवा ३ पिण्डी क्रम ४-सम्पुटोद्भव ५-हेवज्र ६ बुद्ध कपाल ७-सम्बरोदय ८-वाराही कल्प ९-योगाम्बर १०-डाकिनी जाल ११-शुल्कयमारि १२-पीतयमारि १३-रक्तयमारि १४-श्यामयमारि १५-कृष्णयमारि १६-क्रियासंग्रह १७-क्रियाकन्द १८-क्रिया सागर १९-क्रियाकल्पद्रम २०-क्रियार्णव २१-अभिधानोत्तर २२-क्रिया समुच्चय २३-साधन माला २४-साधन समुच्चय २५-साधन संग्रह २६-साधन रत्न २७-साधन परीक्षा २८-साधन कल्पलता २९-तत्त्व ज्ञान ३०-ज्ञानसिद्धि ३१-गुहासिद्धि ३२-उद्यान ३३- नागार्जुन ३४-योगपीठ ३५-पीठावतार ३६-चण्डरोषण ३७-वज्रवीर ३८-वज्रसत्व ३९-मरीचि ४०-तारा ४१- व्रजधानु ४२-विमला प्रभा ४३-मणिकर्णिका ४४-त्रैलोक्य विजय ४५-सम्पुट ४६-मर्म कालिका ४७-कुरुकुल्ला ४८-भूतड़ामर ४९-कालचक्र ५०-योगिनी ५१-योगिनी संचार ५२-योगिनी जाल ५३-योगाम्बर पीठ ५४-

उड्डामर ५५-वसुन्धरासाधन ५६-नैरात्म ५७-डाकार्णव ५८-क्रिया ४सार ५९-यमान्तक ६०-मञ्जुश्री ६१-तन्त्र समुच्चय ६२-क्रियावसन्त ६३-हयग्रीव ६४-सङ्कीर्ण ६५-नामसङ्गीति ६६-अमृतकणिका नामसङ्गीति ६७-गूढोत्पादन सङ्गीति ६८-मायाजाल ६९-ज्ञानोदय ७०-वसन्त तिलक ७१-निष्पन्नयोगाम्बर ७२-महाकाल तन्त्र ।

तन्त्र कवचकी भांति बौद्धोंमें सैकड़ों धारिणी-संग्रह है ।

तिब्बतमें तन्त्रका नाम 'ऋगयुद' है । यह ७८ भागों में है। इनमें २६४० स्वतन्त्र हैं।

परिशिष्ट

अब तक जिन ग्रन्थोंका उल्लेख किया गया है, वे उपलब्ध हैं । इसका यह अर्थ नहीं है कि वे बाजारमें मिल सकेंगे । इसका यही अर्थ है कि वे किसी न किसी पुस्तकालय में अवश्य प्राप्य है, यदि बाजार में नहीं मिलते है।

यहाँ हम कुछ ग्रन्थों की सूची दे रहे हैं। ये प्रायः बाजारमें उपलब्ध हैं। विशेषतः सम्प्रदाय ग्रन्थ, जिनकी चर्चा उनके स्थल पर नहीं की गई, वाणी-ग्रन्थ तथा जैन, बौद्ध ग्रन्थोंकी सूची दी जारही है। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योगादिके भी उपलब्ध मुख्य-

मुख्य ग्रन्थोंकी सूची यहाँ है। ये सब ग्रन्थ प्रायः संस्कृतमें हैं। कुछ की ही हिन्दी टीकायें प्राप्य हैं।

न्याय दर्शनके ग्रन्थ

१-आगम शास्त्रम्-गौड़ पादाचार्यकृत. २-आत्मतत्व विवेक-उदयनाचार्य ३-अनुमान चिन्तामणि ४-उपमान चिन्तामणि ५-कारिकावली ६-कोडपत्रसंग्रह ७-गादाधरी ८-जागदीशी ९-तत्त्वचिन्तामणि १०-तत्त्वसार-राखालदासकृत ११-तर्कताण्डव-व्यासतीर्थकृत १२-तर्कभाषा-केशव मिश्रका १३-तर्क संग्रह १४-न्याय कुसुमाञ्जलि १५-न्याय कौस्तुभ १६-न्याय प्रकाश १७-न्याय प्रदीप १८-न्याय बिन्दु-बौद्धाचार्य धर्म कीर्ति कृत १९-न्याय मञ्जरी (जयन्त भट्ट) २०-न्याय रत्न (मणिकण्ठ मिश्र) २१-न्याय लीलावती २२-न्यायवार्तिक २३-न्याय सार २४-न्याय सिद्धान्त मञ्जरी २५-न्यायसिद्धान्त माला २६-न्याय सिद्धान्त मुक्तावली २७-न्यायेन्दु शेखर २८-पद वाक्य रत्नाकर २९-पदार्थ तत्व निरूपण ३०-प्रमाण मीमांसा (हेमचन्द्राचार्य) ३१-प्रमाणविनोद: ३२-प्रमेय कमल मार्तण्ड ३३-पदार्थ धर्म संग्रह (प्रशस्तपाद भाष्य) ३४-प्रामाण्यवाद (गदाधर भट्ट)३५-भास्करोदय३६-भेद

सिद्धि ३७-मुक्तिवाद ३८-वादवारिधि ३९-व्युत्पत्तिवाद ४०-शक्तिवाद ४१-शतकोटि ४२-सिद्धान्त लक्षण।

बौद्ध न्यायग्रन्थ

१-आत्मतत्त्व विवेक २-तर्क भाषा ३-न्याय बिन्दु। ४-हेतुतत्त्वोपदेश ५-हेतु बिन्दु।

मीमांसा-ग्रन्थ

१-अधिकरण कौमुदी २-अध्वर मीमांसा ३-अर्थवाद विचार ४-अर्थ संग्रह ५-कल्पकलिका ६-जैमिनीयन्यायमाला ७-जैमिनीय सूत्रार्थ संग्रह ८-तत्त्वविदुह ९-तन्त्ररत्न १० तन्त्र रहस्य ११-तन्त्रवार्तिक (कुमारिल भट्ट) १२-तन्त्र सिद्धान्त रत्नावली १३-तौतातितमत तिलक १४-नायक रत्न १५-प्रभाकर विजय १६-प्रकरण पञ्जिका १७-वृहती (प्रभाकर मिश्र) १८-भाट चिन्तामणि १९-भाट्टदीपिका २०-भाट्ट भाषा प्रकाश २१-मानमेयोदय २२-मीमांसाकोष २३-मीमांसानुक्रमणिका (मंडन मिश्र) २४-मीमांसा न्याय प्रकाश २५-मीमांसा परिभाषा २६-मीमांसा बालप्रकाश २७-मीमांसाभ्युदय २८-मीमांसार्थ प्रकाश २९-मीमांसा शास्त्र सर्वस्व ३०-मीमांसा शास्त्रसार ३१-मीमांसा श्लोक वार्तिक ३२-यज्ञतत्त्व प्रकाश ३३-वाक्यर्थ रत्न ३४-विधि

रसायन ३५-विभ्रम विवेक ३६-वेदप्रकाश ३७-शास्त्र दीपिका ३८-सेश्वरमीमांसा।

वैशेषिक दर्शन-ग्रन्थ

१-कणाद-गौतमीय-पदार्थानुशासन २-किरणावली प्रकाश गुण ३-किरणावली प्रकाश-दीधिति ४-न्यायसिद्धान्त तत्त्वामृत ५-पदार्थ मण्डन ६-प्रशस्तपाद भाष्य ७-रससार।

सांख्य-दर्शन-ग्रन्थ

१-सांख्यकारिका २-सांख्यतत्त्व कौमुदी ३-सांख्यतत्त्वा लोक ४-सांख्य संग्रह ५-साँख्यसार।

योग-दर्शन-ग्रन्थ

१-घेरण्ड संहिता २-विन्दु योग ३-मन्त्रयोग संहिता ४ योग याज्ञवल्क्य ५-योगसार ६-शिवसंहिता ७-शिव स्वरोदय ८-हठयोग प्रदीपिका ९-योग बीज।

शाङ्कर (अद्वैत) वेदान्तके ग्रन्थ

१-अद्वैत सिद्धि (मधुसूदन सरस्वती) २-अपरोक्षानुभूति ३-अष्टावक्र गीता ४- अवधूत गीता ५-उपदेशसाहस्री ६-खण्डनखण्डखाद्य ७-चित्सुखी ८-जीवन्मुक्ति विवेक (स्वामी विद्यारण्य)९-तत्त्व कौस्तुभ १०-त्रिपुरा रहस्य ११-नैष्कायसिद्धि १२-पञ्चदशी १३-पञ्चपादिका १४-पञ्चरत्नकारिका १५-

परमार्थसार १६-पूर्वोत्तर मीमांसावाद नक्षत्रमाला १७-प्रमाणमाला १८-प्रस्थान भेद १९-बोधसार २०-ब्रह्मसिद्धि (मंडनमिश्र) २१-भामती २२-भास्करी २३-मिताक्षरा २४-मुक्ताफल २५-योग वाशिष्ठ २६-वाक्यवृत्ति २७-विज्ञान दीपिका २८-विवरण प्रमेय संग्रह २९-विवेक चूड़ामणि ३०-वेदान्त दीपिका ३१-वेदान्त परिभाषा ३२-वेदान्त सार ३३-वेदान्त सिद्धान्त मुक्तावली ३४-सिद्धान्त लेश ३५-संक्षेप शारीरक ३६-सनत्सुजातीय ३७-सम्बन्ध वार्तिक ३८-सर्वसिद्धान्त संग्रह ३९-सूत संहिता ४०-स्वराज्य सिद्धि।

रामानुजीय (विशिष्टाद्वैत) सम्प्रदायके ग्रन्थ

१-अष्टादश रहस्य २-आगम प्रामाण्य (यामुन चार्य) ३-तत्त्वत्रय ४-तत्त्वमुक्ताकलाप ५-तत्वशेखर ६-तत्त्वसार ७-परमार्थ भूषण ८-परमार्थ प्रकाशिका ९-प्रपन्न पारिजात १०-भेदवाद १२-यतीन्द्रमतदीपिका १२-विजय मंगल दीपिका १३-विशिष्टाद्वैताधिकरण माला १४-विषय वाक्य दीपिका १५-विष्णुतत्व दीपिका १६-वेतान्त कारिकावली १७-वेदान्तदीप १८-वेदार्थ संग्रह १६-वैष्णवमत दूषणोद्धार २०-शतदूषणी २१-शरणागति गद्य २२-सद्विद्या विजय २३-सिद्धान्त चिन्तामणि २४-सिद्धित्रय २५-आलवन्दार स्तोत्र।

श्रीरामानन्द सम्प्रदायके ग्रन्थ

१-त्रिरत्नी २-दिव्यस्तोत्र कलाप ३-भक्त कल्पद्म, ४-यतिधर्म समुच्चय ५-यतीन्द्र विंशति ६-रामपटल ७-वैष्णवमताब्जभास्कर ९-भक्तमाल (हिन्दी)।

निम्बार्क (द्वैताद्वैत) सम्प्रदायके ग्रन्थ

१-क्रमदीपिका २-वेदान्तरत्न मञ्जूषा ३-वेदान्त सिद्धान्त संग्रह ४-श्रुत्यन्त कल्पवल्ली ५-श्रुत्यन्त सुरद्रम ६-वेदान्त कौस्तुभप्रभा ७-वेदान्तरत्नमाला ८-युग्मतत्व समीक्षा ९-भगवतत्त्वसुधाम्बुधि१०-आत्मपरमात्मतत्त्वा दर्श ११-नारद नियमानन्द-गोष्ठी-रहस्य १२ माधुर्यलहरी १३-श्रीगीतामृत गंगा १४-महावाणी (हिन्दी) १५-युगल शतक।

बल्लभ (शुद्धाद्वैत) सम्प्रदायके ग्रन्थ

१-गूढार्थदीपिका (धनपति सूरि) २-प्रस्थानरत्नाक ३-ब्रह्मवाद संग्रह ४-शुद्धाद्वैत मार्तण्ड ५-विद्वन्मण्डन ६-श्रीसुबोधिनी हिन्दी ग्रन्थ ७-सूरसागर -परमानन्द सागर ९-अष्टछापके पद १०-दो सौ बाबन वैष्णवन की वार्ता ११-चौरासी वैष्णवनकी वार्ता १२-शिक्षापत्र १३-पोडश ग्रन्थ १४-कीर्तन संग्रह।

माध्व (द्वैत) सम्प्रदायके ग्रन्थ

१-अनुव्याख्यान २-उपाधिखण्डन ३-तरङ्गिणी ४- द्वैताध्व कण्टकोद्धार ५-न्यायामृत लहरी ६-भेद जयश्री ७- मध्व मन्त्र रत्नाकर ८-मध्वमुखालङ्कार ९-मायावाद खण्डन १७-वदावली ११-सत्तत्त्वरत्नमाला १२-सूत्रार्था मृत लहरी।

मध्वगौड़ेश्वर (अचिन्त्यभेदाभेद) सम्प्रदायके ग्रन्थ

१-गीतगोविन्द २-वैष्णव सिद्धान्तरत्न संग्रह ३-षट् सन्दर्भ ४-भक्तिरसामृतसिन्धु ५-वृहद्भागवतामृत ६-लघु भागवतामृत ७-हरिलीलामृत ८-गोबिन्द लीलामृत ९ प्रेम- सम्पुट १०-चैतन्यचरितामृत हिन्दी ११-आदि वाणी १२-महाप्रभु ग्रन्थावली।

हितहरिवंश (राधावल्लभ) सम्प्रदायके ग्रन्थ

१-श्रीराधासुधानिधि (हिन्दी) २-व्यासवाणी ३-श्रीराधाबल्लभ भक्तमाल ४-हितामृत सिन्धु ५-ब्रज प्रेमानन्द सागर ६- श्रृंगाररस-सागर।

स्वामी हरिदासजीका ग्रन्थ

१-केलिमाल ।

नाथ सम्प्रदायके ग्रन्थ

१-गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह २-दुल्लू ज्वालापुराण ३-पशुपति पुराण ४-भर्तहरिशतक ५-योगसारावली ६-योग साहस्री ७-विवेक मार्तण्ड ८-वैश्वानर पुराण ९-शाबर चिन्तामणि १०-सिद्ध सिद्धान्त पद्धति ११-स्वात्म योग प्रदोप।

शैव -शाक्त सम्प्रदायोंके ग्रन्थ

१-आह्निक पद्धति २-ईश्वर प्रत्यभिज्ञा विमशिनी ३-कामकला विलास ४-गणपति तत्व ५-गन्धर्वतन्त्र ६-भारकरी ७-मालिनी विजय ८-मृगेन्द्रतन्त्र -९-वातुलनाथ सूत्र १०-वामकेश्वरीमत विवरण ११-विज्ञान भैरव १२-शिव दृष्टि १३-शिवसूत्रवार्तिक १४-शव परिभाषा १५-श्रीकर भाष्य १६-स्वत्वचिन्तामणि १७-स्पन्दकारिका १८-स्पन्द निर्णय १६-स्पन्द संदोह २०-स्वच्छन्द तन्त्र २१-सिद्धित्रय।

तन्त्र-अनुष्ठान-ग्रन्थ

१-अत्रि संहिता २-अनिरुद्ध संहिता ३-अनुष्ठान प्रकाश ४-अष्ट सिद्धि ५- आसुरी कल्प ६-ईश्वर संहिता ७-उच्छिष्ट गणपति पंचांग ८-उड्डामरेश्वर तन्त्र ९-उड्डीशतन्त्र १०- कपूरस्तव ११-

काली विलास-तन्त्र १२-कालीतन्त्र १३-कुल चड़ामणि तन्त्र १४-कुलार्णव तन्त्र १५-कोलावली निर्णय १६-कौलोपनिषद् १७-क्रियोड्डीश तन्त्र १८-गायत्री पंचांग १९-गुप्त साधन तन्त्र २०-चक्रपूजा २१-ज्ञानार्णवतन्त्र २२-तन्त्रराज २३-तन्त्र समुच्चय २४-तन्त्रसार २५-तन्त्रलोक २६-तारातन्त्र २७-तारा भक्ति सुधार्णव २८-तारा रहस्य वृत्तिका २९-तारिणी पारिजात ३०-तोडल तन्त्र। ३१-दत्तात्रय तन्त्र ३२-दुर्गोपासना कल्पद्म ३३-नरेश्वर परीक्षा ३४-परम संहिता ३५-परमार्थ सार ३६-परशुराम कल्पसूत्र ३७-परात्रिशिका ३८-पारमेश्वर संहिता ३९-पाशुपत सूत्र ४०-पूर्णताप्रत्यभिज्ञा ४१-पौष्कर संहिता ४२-प्रत्यंगिरा पञ्चाङ्ग ४३-प्रपञ्चसार तन्त्र ४४-प्राणतोषिणीतन्त्र ४५-बगलातन्त्र ४६-बटुक भैरवीपासनाध्याय ४७-वृहत्सा बरतन्त्र ४८-मंत्रकौमुदी ४९-मन्त्रविद्या ५०-मरीचि संहिता ५१-महानिर्वाण तन्त्र ५२-महापक्षिणी साधन ५३-मातृका विलास ५४-माहेश्वरतन्त्र ५५-माहेश्वरी तन्त्र ५६-मुमुक्ष मार्ग ५७-मृगेन्द्रतन्त्र ५८-योगिनीतन्त्र ५९-रुद्रयामलतन्त्र ६०-लक्ष्मीतन्त्र ६१-वरिवस्यारहस्य ६२-विज्ञान भैरव ६३-शाक्त प्रमोद ६४-शारदातिलक ६५-

श्याममारहस्यतन्त्र ६६-सामतन्त्र ६७-हनमदुपासना , ६८-हंस विलास ६९-सप्तशती रहस्य ७०-सिद्धशंकर तन्त्र।

कबीर पंथके ग्रन्थ

१-कबीर-बीजक २-कबीरसागर ३-पञ्चग्रन्थी ४-साखी ग्रन्थ ५-कबीरोपासना पद्धति।

बौद्ध धर्म-ग्रन्थ

[बौद्ध धर्मके बहुतसे ग्रन्थ पाली भाषामें हैं।]

१-अङ्गत्तर निकाय २-अट्ठशालिनी ३-अभिधम्मत्थ संगहो ४-अभिधर्म-कोष ५-अभिधर्म दीप ६-अभिधर्म समुच्चय ७-अभिधर्मामृत ८-अर्थपादसूत्र ९-अवदान कल्पलता १०-अवदान शतक ११-करतल रत्नम् १२-कालाम सूत्र १३-खुद्दक निकाय १४-गण्डव्यूह सूत्र १५-चरियापिटक १६-चित्त विशुद्धि प्रकरण १७-चुल्लबग १८-जातकमाला १९-ज्ञान प्रस्थान शास्त्र २०-ज्ञानश्री मित्रनिबन्धावली २१-डाकार्णव २२-थेरगाथा २३-थेरीगाथा २४-दिव्यावदान २५-दीघनिकाम २६-धम्मपद २७-धम्मसंगणि २८-धर्मोत्तर प्रदीप २९-धातु कथा पुग्गपञ्जत्ति ३०-निष्पन्न योगावली ३१-नैरात्म्य परिपृच्छा ३२-न्यायविन्दु ३३-

पटठानपालि ३४-पञ्च विंशति साहित्रका प्रज्ञापारमिता ३५-परिवार पालि ३६-पाचित्तिय ३७-पाति मोक्खसूत्तम् ३८-पाराजिक ३९-प्रज्ञा प्रदीप ४०-प्रमाण वार्तिक ४१-प्रातिमोक्षसूत्र ४२-बौद्धागमार्थ संग्रह ४३-मझिमनिकाय ४४-मध्यमक शास्त्र ४५-मध्यान्त विभाग सूत्र ४६-महापरिनिब्बानसूत्र ४७-महावग्गो ४८-माध्यमिक कारिका ४९-मिलिन्दपन्हो ५०-मूल मध्यमकारिका ५१-यमक पालि ५२-योगाचार भूमि ५३-रत्नकरावतारिका ५४-महायानसूत्र ५५-ललित विस्तार ५६-वज्रसूची उपनिषद् ५७-वज्जालगम् ५८-विग्रह व्यावतिनी ५९-विज्ञप्ति मात्रता सिद्धि ६०-विनयपिटक ६१-विशुद्धिमग्ग ६२-विशुद्धिमार्ग ६३-शार्दूल कर्णावदान ६४-शिक्षा समुच्चय ६५-श्लोकान्तारा ६६-संयुक्त निकाय ६७-सद्धर्म पुडरीक ६८-सिगालोवाद सुत्त ६९-सिंगाल सुत्तम ७०-मुत्तनिपात ७१-हेतुतत्त्वोपदेश ७२-हेतुबिन्दु।

जैन धर्म-ग्रन्थ

१-अंग विज्जा २-अकलङ्क ग्रन्थत्रयी ३-अध्यात्म कमल मार्तण्ड ४-अध्यात्म कल्पदुम ५-अनेकान्त जयपताका ६-

अनेकान्त व्यवस्था प्रकरण ७-अर्थागम कल्पसूत्र ८-आचारांग सूत्र ९-आत्मानुशासन १०-आदि पुराण ११-आप्त परीक्षा १२-उक्तिरत्नाकर १३-उक्ति व्यक्ति प्रकरण १४-उत्तर पुराण १५-उत्तराध्ययन सूत्र १६-उपासकाध्ययन १७-कथाकोष प्रकरण १८-कल्पसूत्र १९-कसापपाहुड़सुत्त २०-कातन्त्ररूप माला २१-केवल ज्ञान प्रश्न चूडामणि २२-क्षत्र चूड़ामणि २३-गणघरवाद २४-जैन धर्म २५-जैनधर्म सिन्ध २६-जैन धर्मामृत २७-जैनस्तोत्र संग्रह २८-जनेन्द्र महावृत्ति २९-ज्ञान विन्दु प्रकरण, ३०-ज्ञानार्णव ३१-तत्त्व समुच्चय ३२-तत्त्वार्थ वार्तिक ३३-तत्त्वार्थ वृत्ति ३४-तत्त्वार्थ सूत्र ३५-तिलक मञ्जरी ३६ तीर्थकल्प ३७-द्वादशारनय चक्र ३८-धर्म विन्दु ३९-धर्म महोदय ४०-धातुरत्नाकर ४१-धूर्तख्यिान ४२-नन्दीश्वर विधान ४३-नाममाला ४४-नायाधम्मकहा '४५-न्याय कमुद चन्द्र ४६-न्याय विनिश्चय ४७-न्याय संग्रह ४८-न्यायावतार ४९-पमउचरिउ ५०-पञ्चप्रति क्रमण सूत्र ५१-पञ्च संग्रह ५२-पञ्चाध्यायी ५३-पद्म पुराण ५४-परमात्म प्रकाश-योगसार ५५-पाण्डव पुराण ५६-पाइमखद्द महण्णव ५७-पुरुषार्थ सिध्युपाय ५८-प्रबन्ध कोश ५९-प्रबन्ध चिन्तामणि ६०-प्रभुतादि संग्रह ६१-प्रमाण प्रमेय कलिका ६२-

प्रमाण मीमांसा ६३-प्रमेय कमल मार्तण्ड ६४-प्रमेय रत्नालङ्कार ६५-प्रशमरति प्रकरण ६६-बृहत् कल्पसूत्र ६७-भद्रबाहु संहिता ६८-महा पुराण ६९-महाबन्ध ७०-योगशास्त्र ७१-रत्नकरण्डश्रावका चार ७२-रिष्ट समुच्चय ७३-विवागसुयम ७४-विविध तीर्थ कल्प ७५-शास्त्र वार्ता समुच्चय ७६-श्रावक धर्म प्रदीप ७७-समयसार ७८-सम्मतितर्क ७९-सर्वार्थसिद्धि ८०-सिद्धान्तसार संग्रह ८१-सिद्धि विनिश्चय ८२-सुत्तागम ८३-सूत्रकृताङ्ग सूत्र ८४-स्थानांग-समवायांग ८५-स्याद्वाद मञ्जरी ८६-स्याद्वाद सिद्धि ८७-हरिवंश पुराण।

हिन्दू धर्म में सम्प्रदाय बहुत हैं। सभी सम्प्रदायोंके अपने-अपने आचार्योंके ग्रन्थ हैं। न तो सब सम्प्रदायों की और न उनके ग्रन्थों की ही पूरी सूची दी जानी सम्भव है। जिन सम्प्रदायोंके ग्रन्थों की सूची दी गई है, उनके भी केवल मुख्य- मुख्य ग्रन्थों की सूची दी गई है। अन्यथा शाङ्कर वेदान्त सम्प्रदाय, श्रीरामानुज सम्प्रदाय, मध्वगौड़ेश्वर सम्प्रदाय, जैन और बौद्धमें-से किसी एक के ही ग्रन्थोंकी संख्या सहस्रोंमें पहुँचती है।

वेद, वेदांग उपनिषदादि, पुराण, ज्योतिष, व्याकरण, दर्शन-शास्त्र तथा सम्प्रदाय-ग्रन्थों एवं तन्त्रोंमें भी अनेक ग्रन्थोंपर भाष्य

या टीकायें हैं। उन भाष्य, टीकाओं पर भी टीका-विवरण-व्याख्यादिका क्रम चला है। यह स्मरण रखना चाहिये कि संस्कृतमें भाष्य या टीकाका अर्थ केवल मूल ग्रन्थ की व्याख्या मात्र नहीं होता। केवल व्याख्या करने वाली टीका भी होती हैं, किन्तु महत्वपूर्ण भाष्यों एवं टीकाओं का तो स्वतन्त्र महत्व होता है। उनमें मूल ग्रन्थके विषयपर आलोचना तथा सम्पूर्ण विचार होता है। उनके अंग-प्रत्यंगका सम्यक् निरूपण होता है। जब मूल ग्रन्थोंकी सूची ही दे पाना शक्य नहीं है तो भाष्य, टीका आदि ग्रन्थोंकी तो चर्चा ही कैसे की जा सकती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दू धर्म का धार्मिक साहित्य जो उपलब्ध है, वह भी अत्यन्त विशाल है। यद्यपि उपलब्ध साहित्य सम्पूर्ण साहित्यकी दृष्टिसे बहुत ही कम है।

यह बात स्मरण रखने योग्य है कि हिन्दू धर्म जीवन और धर्म को अभिन्न मानता है। जीवनके सब व्यावहारिक क्षेत्र धर्म के द्वारा ही अनुशासित होते हैं। व्यवहार पृथक और धर्म पृथक- ऐसा यहां नहीं है। इसलिये जीवनके सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित सम्पूर्ण वाङ्गमय धार्मिक साहित्य के अन्तर्गत ही आ जाया करता था। यह कला, साहित्य, राजनीति, विज्ञान, अर्थशास्त्रादि को धर्मसे पृथक रखनेकी परम्परा भारतमें बहुत प्राचीन नहीं है। अतः हमारा सम्पूर्ण संस्कृत-प्राकृत-पाली और उससे सम्बन्धित हिन्दी साहित्य धार्मिक साहित्य ही है।